अमरनाथ

यात्रा गाईड



A Pilgrimage to sacred AMARNATH CAVE

तथा

अमर कथा

विवरण सहित

रणजीत सिंह

अमीरा कदल श्रीनगर (काश्मीर)

॥ श्री हरि ॥

श्री अमरनाथ जी

को

यात्रा गाइड तथा अमर कथा

(सचित्र व नकशा सहित)

लेखक

आचार्य श्री शिवनाथराय जी 'तस्कीन'

11th Edition

प्रकाशक

रणजीतसिंह फोटो डीलर्स

अमीरा कदल श्रीनगर (काशमीर)

पंजाब हौजरी हाउस, २६ लाल चौक, श्रीनगर

मूल्य : दो रुपये

Price Rs. 2

विषय-सूची

अमरनाथ गुफा का रहस्य

(विवरण सहित)

तीर्थ में क्यों जाना चाहिए ?

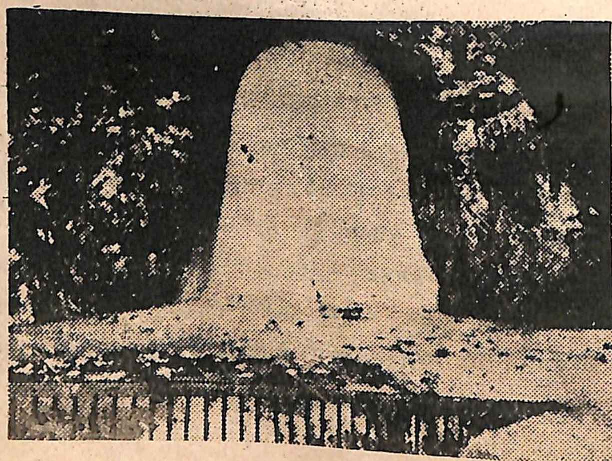
भगवत प्राप्ति के लिए। भगवान का ज्ञान, काम लोभवर्जित साधुसंग होता है साधु मिलते हैं तीर्थों में।

वलीपलितदेहो वा यौवनेनान्वितोऽपि वा।
ज्ञात्वा मृत्युमनिस्तीर्थं ह रशरणमाव्रजेत् ।।
तत्कीर्तने तच्छ्रवणे वन्दने त य पूजने।
मतिरेव प्रकर्तव्या नान्यत्र वनितादिषु ।।
सर्वं नश्वरमालोक्य क्षणस्थायि सुदु खदम्।
जन्म मृत्यजरातीतं भक्ति वल्लभपच्युतम्।।
स हरिर्ज्ञायते साधुसंगमात् पापवर्जितात्।
येषां कृपातः पुरुषा भवन्त्यसुखवर्जिताः ।।
ते साधवः शान्तरागाः कामलोभविवर्जिताः।
ब्रुवन्ति यम्महाराज तत् संसारनिवर्तकम् ।।
तीर्थेषु लभ्यते साधू रामचन्द्रपरायणाः।
यद्दर्शनं नृणां पापराशिदाहाशुशुक्षणि ।।
तस्मात् तीर्थेषु गन्तव्य नरैः संसारभीरुभिः।
पुण्योदवेषु सततं साधु श्रेणिविराजषु ।।
(पद्मपुराण, पाताल खण्ड १६। १०-१२, २४-१७)

मनुष्य जीवन का प्रधान उद्देश्य और एक मात्र परम लाभ है, भगवत प्राप्ति ! मनुष्य के शरीर में चाहे झुरियाँ पड़ गई हों. सिर के बाल पक गये हों अथवा वह अभी तक युवक अवस्था ही हो पाई है, मृत्यु को कोई टाल नहीं सकता—यों समझ कर (भगवत प्राप्ति के लिए) भगवान के शरण जाना चाहिए तथा भगवान के कीर्तन, श्रवण वन्दन और पूजन में मन लगाना चाहिये। स्त्री पुत्रादि अन्य संसारी वस्तुओं में नहीं। यह सारा प्रपच नाशवान

क्षण भर रहने वाला तथा अत्यन्त दुःख देने वाला है, परन्तु श्री भगवान का जन्म मृत्यु और जीवन से परे हैं (वह नित्य सत्य है) और भक्ति देवी के प्राणवल्लभ तथा अच्युत (सदा अपने सच्चिदानन्द स्वरूप मे स्थिति है) यह विचार कर भगवान का भजन करना उचित है :

उन भगवान का 'उनके स्वरूप, तत्व, गुण लीला, नाम आदि का' ज्ञान होता है पाप रहित साधु संग से—उन साधुओं के सग जिनकी कृपा से मनुष्य दुख से छूट जाते हैं। साधु (वह नहीं है जो केवल नामधारी है और मन में नहीं हैं) साधु वस्तुतः वह है जिनकी .क-परलोक के विषयों में आसक्ति नहीं रह गई जिनके मन काम संकल्प नहीं है तथा जो लोभ से रहित है अर्थात् जो अनासक्त तथा धन और स्त्री से किसी प्रकार का मानसिक सम्पर्क भी नहीं रखते। ऐसे साधु जो उपदेश देते हैं उससे संसार का बन्धन छूट जाता है (भगवत प्राप्ति) हो जाती है। ऐसे भगवान श्री रामचन्द्र जी के भजन में लगे हुए साधु मिलते हैं तीर्थों में इनका दर्शन मनुष्यों की पापराशि जला डालने के लिए अग्नि का काम करता है। इसलिए जो लोग संसार से डरे हुए हैं अर्थात् संसार बन्धन से छूटना चाहते हैं, उनको पवित्र जल वाले तीर्थों में सदा साधु महात्माओं के सहवास से सुशोभित रहना चाहिए, अवश्य जाना चाहिए।



तीर्थ यात्रा की शास्त्रीय विधि

विरागं जनयेत् पूर्वं कलागादिकुटुम्बके ।
असत्यभूतं तज्जात्वा हरि तु मनसा स्मरेत् ।।
क्रोशमात्र ततो गत्वा राम रामेति च ब्रूवन् ।
तत्र तीर्थादिषु स्नात्वा क्षौरं कुर्याद् विधनावित् ।।
मनुष्याणां च पापा नि तीर्थानि प्रति गच्छताम् ।
केशमाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् तद्वपनं चरेत् ।।
ततो दण्डं तु निर्ग्रन्थि कमण्डलुमथाजिनम् ।
विभृयाल्लोभनिर्मुक्तस्तीर्थवेषघरो नर: ।।
विधिना गच्छतां नृणा फलावाप्तिर्विशेषत: ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन तीर्थयात्राविधि चरेत् ।।
यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैच सुसंयतम् ।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते ।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण भक्तवत्सल गोपते ।
शरण भगवन् विष्णो मां पाहि बहुसंसृते ।।
इति ब्रूवन् रसनया मनसा च हरि स्मरन् ।
पादचारो गति कुर्यात् तीर्थं प्रति महोदय: ।।

(पद्मपुराण, पाताल खण्ड १९ । १९-२६)

(तीर्थ यात्रा करने का निश्चय करके) सबसे पहले स्त्री, कुटुम्ब, घर, पदार्थ आदि को असत्य जान कर उनमें जरा भी आसक्ति न रहने दे और मन से श्री भगवान का स्मरण करे । (घर-परिवार धनादि में मन अटका रहेगा तो उन्हीं का स्मरण होगा—तीर्थ यात्रा का उद्देश्य ही याद नहीं रहेगा) तदनन्तर 'राम राम' की रट लगाते हुए तीर्थ यात्रा आरम्भ करें । एक कोस जाने के बाद वहाँ तीर्थ (पवित्र नदी तालाब कुएं आदि में स्नान करके और

करवा ले। यात्रा की विधि जानने के लिए आवश्यक है तीर्थों की ओर जाने वाले मनुष्यों के पाप उनके बालों पर आकर ठहर जाते हैं, अतः उनका मुण्डन करा देना चाहिए। उसके बाद बिना गाँठ का दण्ड अर्थात् मोटी चिकनी बाँस की मजबूत लाठी, कमण्डल और आसन लेकर तीर्थ के उपयोगी वेष धारण करे (पूरी सादगी स्वीकार करे) तथा (धन, मान, बड़ाई, सत्कार पूजा आदि के) लोभ का त्याग कर दें. इस विधि से यात्रा करने वाले मनुष्यों को विशेष रूप से फल की प्राप्ति होती है। इसलिए पुरा प्रयत्न करके तीर्थ यात्रा की विधि का पालन करे। जिनके दोनों हाथ और दोनों पैर तथा मन वश में होते हैं अर्थात् क्रमशः भगवान की सेवा में लगे रहते हैं और जिसमें (अध्यात्मक) विद्या, तपस्या तथा कीर्ति होती है, वह तीर्थ के फल को प्राप्त करता है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण भक्तवत्सल गोपते।
शरण्यं भगवन् विष्णो मां पाहि बहुसंसृते॥

जीभ से इस मंत्र का उच्चारण तथा मन से भगवान का स्मरण करते हुए पैदल ही तीर्थ यात्रा करनी चाहिए, तभी यह मट्टीन अभ्युदय को प्राप्ति कराने वाली होती है।

★

अमरनाथ दिग्दर्शन

अमरनाथ का परमपावन क्षेत्र कश्मीर में पड़ता है। कश्मीर जाने के लिए सबसे पहले जम्मू जाना पड़ता है। जम्मू (उत्तरी रेलवे) का आखिरी स्टेशन है। देश के प्रत्येक भाग से जम्मू के लिए सीधी गाड़ी मिलती है। जम्मू से बस द्वारा श्री नगर (कश्मीर) जाना पड़ता है। प्रायः प्रत्येक रेलवे स्टेशन से कश्मीर की राजधानी श्रीनगर जाने के लिये तीन महीने की वापसी टिकिट अच्छी रियायत के साथ मिल जाते हैं। इस सम्बन्ध में अपने पास के स्टेशन मास्टर से पता लगा लेना चाहिए : कश्मीर यात्रा का समय है अप्रैल से सितम्बर और अमरनाथ यात्रा जुलाई के आरम्भ से पुरे अगस्त तक किसी समय की जा सकती है।

काश्मीर यात्रा के लिए अन्तिम रेलवे स्टेशन जम्मू मिलता है। यह एक सुन्दर नगर है। आप जाते समय या लौटते समय पठानकोट से तीन तीर्थों की यात्रा कर सकते हैं-१. कांगड़ा, २. कांगड़ा बैजनाथ, ३. ज्वालामुखी। पठानकोट से वैजनाथ पपरौला तक रेलवे लाइन जाती है। इस लाइन पर ५० मील पर ज्वालामुखी रोड स्टेशन हैं। १३ मील दूर पहाड़ी पर ज्वालामुखी मन्दिर है। यह १३ मील पैदल का मार्ग है। इस मन्दिर में पृथ्वी गर्भ से सदा अग्नि शिखा निकलती रहती है। यह ५१ शक्ति पीठों में एक शक्तिपीठ है। ज्वालामुखी रोड से १० मील आगे काँगड़ा मन्दिर स्टेशन है। यहाँ विजयेश्वरी अथवा देवी का मन्दिर है इस लाइन पर २१ मील आगे बैजनाथ पपरौला स्टेशन है। यहाँ श्री वैद्यनाथ शिवलिंग है। कुछ लोग इसी शिवलिंग को द्वादश: ज्योतिर्लिंगों में मानते हैं। यहाँ शिवरात्रि को मेला लगता है। इन तीर्थों की यात्रा करके आप पांचवें दिन जम्मू लौटकर आ सकते हैं।

काश्मीर की यात्रा जम्मू से श्रीनगर जाते समय मार्ग में ही आपको ड्राइवर पहाड़ी पर जाता एक मार्ग दिखाएगा। वह मार्ग वैष्णव देवी को जाता है। आश्विन नवरात्र में वहाँ मेला होता है और तब यात्री भी जाते हैं, किन्तु अत्यन्त वन्य एवं निर्जन मार्ग होने से एक दूसरे समय में वहां की यात्रा कठिन ही है।

श्रीनगर तथा उसके आस-पास अनेक सुन्दर दर्शनीय स्थान हैं। श्रीनगर से लगी हुई एक पहाड़ी पर श्री आद्यशंकराचार्य द्वारा स्थापित शिवलिंग है। इस पर्वत को ही शंकराचार्य कहते हैं। लगभग दो मील कड़ी चढ़ाई के बाद यात्री मन्दिर में पहुँचते हैं पूरा श्रीनगर जैसे मन्दिर के चरणों में पड़ा है और मूर्ति इतनी भव्य है कि चढ़ाई का सब श्रम दर्शन करते ही भूल जाता है। मन्दिर बहुत प्राचीन है, पुरातत्वविदों के मतानुसार भी लगभग दो सहस्त्र वर्ष प्राचीन है।

शंकराचार्य के पर्वत के नीचे शकर का मठ है। कहा जाता है कि यह जगदगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित है इस स्थान को दुर्गानाग का मन्दिर भी कहते हैं। नगर में शाहहमदन की मस्जिद है, जो देवदार की लकडी से चौकोर बनी

है। यह मस्जिद प्राचीन मस्जिद ध्वज से बनाई गई है। इसके कोने में पानी का एक स्त्रोत है, हिन्दू उस स्थान की पूजा करते हैं और मानते हैं कि वह काली मन्दिर का स्थान है। नगर में चौथे पुल के पास महाश्री का पाँच शिखरों वाला मन्दिर जो अब शमशान भूमि में बदल गया है। नगर के पास हरि नामक एक छोटी पहाड़ी है। बादशाह अकबरा ने उस पर एक परकोटा बनवा दिया है। परकोटे के भीतर एक मन्दिर और गुरुद्वार भी है। वह सैनिक सुरक्षित स्थान है और उसे देखने के लिए श्रीनगर के विजिटर्स ब्यूरो आफिस से अनुमति पत्र ले जाना आवश्यक है इस पहाड़ी के विशाल शिला पर महागणेश की मूर्ति है।

श्रीनगर में दो कलापूर्ण मस्जिदें दर्शनीय हैं—विशेषकर नूरजहां की बनवाई पत्थर की मस्जिद। इनके अतिरिक्त नगर से दूर मुगल उद्यान तो अपने सौंदर्य के लिए विशेष प्रसिद्ध है। यह उद्यान डल के किनारे-किनारे है। रविवार को इन उद्यानों के झरनों पर स्थान-स्थान पर फुहारे चल रहे होते हैं। उस दिन यात्री तथा अधिकांश नागरिक भी इन उद्यानों की सैर को आते हैं और पूरा दिन उधर ही व्यतीत करके लौटते हैं। उद्यानों तक नौका से भी जा सकते हैं और डल झील के किनारे-किनारे सड़क भी जाती है रविवार को मोटर बस भी जाती है। जहां मोटर बस से जा सकते हैं डल झील के किनारे वह मुख्य उद्यान है— शालीमार बाग', 'निशात बाग'। इनके अतिरिक्त नौका से जाकर देखने योग्य है 'नसीम बाग'. शंकराचार्य शिखर के पास ही नेहरू पार्क है जहां झील में स्नान की भी उत्तम सुविधा है।

काश्मीर में दूसरे मन्दिर एवं तीर्थ स्थान हैं—खीर भवानी, अनन्त नाग, और मार्तण्ड मन्दिर तथा दर्शनीय स्थानों में गुलमर्ग, मानसबल तथा पहलगांव मुख्य हैं। कुछ यात्री पहलगाँव से कोलाही ग्लेसियर भी जाते हैं। श्रीनगर के विजिटर्स ब्यूरो से आप मोटर बसों का कार्यक्रम ज्ञात करके उसके अनुसार यात्रा करें तो बहुत से दर्शनीय स्थान मोटर बसों से ही देख लेंगे। जैसे मोटर बस से मानसबल को देखने जाते समय खीर भवानी मन्दिर के दर्शन हो जायेंगे। यहां ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी को मेला लगता है।

श्रीनगर से मोटर बस द्वारा पहलगाँव जाया जा सकता है। इस मार्ग के

मध्य में ही अनन्तनाग है। मार्तण्ड का प्राचीन तीर्थ पर्वत पर है, मार्ग के मटनगांव में सरोवर है और पंडे उसी को मार्तण्ड तीर्थ बतलाते है। वस्तुतः पंडों के ग्राम मटन से २-३ मील दूर श्री नगर मार्ग पर ही एक छोटी-सी पहाड़ी है, जिस पर मार्तण्ड मन्दिर के भग्नांश शेष है। इसी मार्ग पर अवन्ती-पुर नामक प्राचीन नगर में भी दो मन्दिरों के भग्नांश हैं।

पूरा काश्मीर ही दर्शनीय है, किन्तु उसके सभी स्थलों का वर्णन देना यहां शक्य नहीं हैं मूल विषय तो है अमरनाथ यात्रा, इस यात्रा के लिए आपको श्रीनगर से मोटर बस द्वारा पहलगांव जाना पड़ेगा पहलगांव में होटल है जिसमें ठहरने की अच्छी व्यवस्था है। तम्बुओं में भी लोग ठहरते हैं। यहां से अमरनाथ २८ मील है और यह मार्ग पैदल या घोड़े से पार करना पड़ता है।

हिमप्रदेशीय यात्राओं में अमरनाथ की यात्रा सबसे सुगम है और अधिक यात्री भी इस यात्रा में जाते हैं। इस यात्रा के लिए कोई विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं है, ऊनी कपड़े ऊनी मौजे, मकी कैप (सिर ढकने की ऊँची टोपी) गलूबन्द, ऊनी दस्ताने, बक छड़ी, तीन कम्बल, थोड़ी खटाई, सूखे आलूबुखारे, बरसाती टार्च और शक्य हो तो स्टोव। सब ऊनी सामान, छड़ी आदि पहलगांव से भी खरीद सकते हैं। बरसाती न हो तो वह पहलगांव से किराये पर मिल जाती है। भोजन का सामान नहीं भी ले जायें तो आगे भोजन मिलता रहेगा। कुछ जल-पान का सामान साथ ले जाना चाहिए।

यात्रा के लिए पैदल जाना हों तो सामान ढोने को कुली यहां से लेना पड़ता है। सवारी के लिए घोड़े भी निश्चित किराया लेकर लौटने तक मिल जाते हैं। तीन-चार यात्री साथ हो तो सामान ढोने के लिए खच्चर लेना सुविधाजनक होता है।

यात्रा का समय

अमरनाथ की मुख्य यात्रा तो श्रावणी पूर्णिमा की होती है। आषाढ़ की पूर्णिमा को भी अधिक यात्री जाते हैं, किन्तु इन्हीं तिथियों में यात्रा हो, यह आवश्यक नहीं है। जुलाई के पहले सप्ताह से अगस्त के अन्त तक प्रायः प्र ति-

दिन पहलगांव से यात्री जाते रहते हैं। किसी भी समय इस अवधि में जाया जा सकता है।

मार्ग

१. पहलगांव से चन्दनवाड़ी

६ मील मार्ग साधारणतः अच्छा है। चन्दनवाड़ी में अच्छे होटल हैं। भोजनादि का सामान ठीक मिल जाता है, लिदर नदी के किनारे-किनारे मार्ग जाता है।

२. शेषनाग (१२, २३० ऊँचाई)

८ मील, यहां डाक बंगला है, किन्तु मेले के दिनों में भीड़ अधिक होती हैं। उस समय तम्बू लगाकर ठहरना पड़ता है। तम्बू पहलगांव से किराये पर ले जाना होता है, मेले के अतिरिक्त दिनों मे तम्बू आवश्यक नहीं। चन्दनवाड़ी से शेषनाग के बीच में पिस्सु घाटी की तीन मील की कड़ी चढ़ाई है। शेषनाग भील का सौन्दर्य अद्भुत है, यहाँ भी एक होटल है।

३. पंचतरणी

८।। मील, शेषनाग से आगे का मार्ग हिमाच्छादित है। इस मार्ग से चलते समय हाथों तथा मुख में वेसलीन लगा लेनी चाहिए। जहां मिचली आवे वहाँ खटाई चूसने से आराम मिलता है।

४. अमरनाथ

३।। मील, अमरनाथ में ठहरने का स्थान नहीं है। यात्री को पंचतरणी में जलपान करके अमरनाथ जाना चाहिए। यहाँ स्नान दर्शन करके शाम तक यात्री पंचतरणी लौट जाते हैं। वहाँ रात्रि विश्राम के लिए धर्मशालाएँ हैं। यात्रा के दिनों में होटल भी रहता है, किन्तु एक दिन के लिए भोजन साथ ले जाना उत्तम है।

नोट—इस यात्रा में पहले दिन यात्री पहलगांव से चलकर रात्रि विश्राम शेषनाग में करते हैं। दूसरे दिन शेषनाग से चलकर अमरनाथ तक चले जाते हैं और वहां से दर्शन करके लौट कर पंचतरणी में यात्री बिश्राम करते हैं। तीसरे दिन पंचतरणी से चलकर प्रायः पहलगांव पहुँच जाते हैं। इस प्रकार यह केवल तीन दिन की यात्रा है।

अमरनाथ

समुद्र स्तर से १२७२९ फुट की ऊँचाई पर पर्वत में यह लगभग ६० फुट लम्बी २५ से ३० फुट चौड़ी, १५ ऊंची प्राकृतिक गुफा है और उसमें हिम के प्राकृतिक पीठ पर हिमनिर्मित प्राकृतिक शिवलिंग हैं। यह बात सच नहीं है। कि यह शिवलिंग आमावस्या को नहीं रहता और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से क्रमशः बनता पूर्णिमा को पूर्ण हो जाता है तथा कृष्ण पक्ष में धीरे-धीरे घटता जाता है। यह बात कैसे फैली कहा नहीं जा सकता। बहुत लोगों ने इसे लिखा भी है। इसे किन्तु पूर्णिमा से भिन्न तिथि में यात्रा करके देख लिया गया है कि ऐसी कोई बात नहीं है। हिमनिर्मित शिवलिंग जाड़ों में स्वतः बनता है और बहुत मन्दगति से क्षीण होता है वह कभी भी पूर्णतः लुप्तः नहीं होता, इतिहास में कभी पूर्ण लुप्त हुआ होगा, इसमें सन्देह ही है। अमरनाथ गुफा में एक गणेश पीठ तथा एक पार्वती पीठ भी हिम से बनता है। पार्वती पीठ ५१ शक्ति पीठों में से हैं। यहाँ सती का कण्ठ गिरा था।

अवश्य ही अमरनाथ से हिमलिंग में एक अदभुत बात है कि वह हिमलिंग तथा लिंगपीठ (हिम चबूतरा) ठोस पक्की बरफ का होता है जबकि गुफा के बाहर मीलों तक सर्वत्र कच्ची बरफ ही मिलती है।

अमरनाथ गुफा से नीचे ही अमरगंगा का प्रवाह है। यात्री उसमें स्नान करके गुफा में जाते हैं। सवारी के घोड़े अधिकतर एक या आधे मील दूर ही रुक जाते हैं। अमरगंगा से लगभग दो फर्लांग चढ़ाई पर जाकर गुफा में जाना पड़ता है। गुफा में मुख्य शिवलिंग को छोड़ कर दो और हिम के छोटे विग्रह बनते हैं। जिन्हें पार्वती तथा गणपति की मूर्तियाँ कहा जाता है। गुफा में जहाँ तहाँ बूँद करके जल टपकता रहता है। कहा जाता है कि गुफा के ऊपर पर्वत पर श्रीराम कुण्ड है और उसी का जल गुफा में टपकता रहता है। गुफा के पास एक स्थान पर सफेद भस्म जैसी मिट्टी निकलती है जिसे यात्री प्रसाद

स्वरूप लाते हैं। गुफा में वन्य कबूतर भी दिखाई देते हैं। उनकी संख्या विभिन्न समयों में विभिन्न देखी गई है।

यदि वर्षा न होती हो, बादल न हो धूप निकली हो तो अमरनाथ गुफा में शीत का कोई अनुभव नहीं होता। प्रत्येक दशा में इस गुफा में यात्री एक अनिर्वचनीय अद्भुत सात्विकता तथा शान्ति का अनुभव करता है। जो उसे अलूप करता रहता है।



बूढ़े अमरनाथ

काश्मीर में पूंछ प्रसिद्ध नगर है। वहां से १४ मील दूर ऊंची पहाड़ियों से घिरा यह मन्दिर है। पूरा मन्दिर एक ही श्वेत पत्थर का बना है। मन्दिर के चारों ओर बावड़ियां हैं। यहाँ अमरनाथ की मूर्ति के नीचे से जल निकला करता है। जो इन बावड़ियों में आता है।

जम्मू से पूंछ के लिए मोटर बसें चलती हैं। कहा जाता है कि यही प्राचीन अमरनाथ स्थान है। पहले लोग यहीं यात्रा करने आते थे। यहीं पुलस्ता नदी है, तट पर महर्षि पुलस्त्य का आश्रम था। दूसरा अमरनाथ तो पीछे प्रसिद्ध हुआ है।

अमरनाथ की कथा

इस कथा का नाम अमर कथा इसलिए है कि इसके श्रवण करने से शिव-धाम की प्राप्ति होती है। यह वह परम पवित्र कथा है जिसके सुनने से सुनने वालों को अमरपद की प्राप्ति होती है। तथा वह अमर हो जाते हैं। यह कथा श्री शंकर भगवान ने इसी गुफा में (श्री अमरनाथ जी की गुफा में) भगवती पार्वती जी को सुनाई थी। इस कथा को सुनकर ही श्री शुकदेवजी अमर हो गये थे। जब भगवान श्री शंकर यह कथा भगवती पार्वती को सुना रहे थे तो वहां एक तोते का बच्चा भी इस परम पवित्र कथा को सुन रहा था और इसे सुनकर फिर उस तोते के बच्चे ने श्री शुकदेव स्वरूप को पाया था। 'शुक' संस्कृत में तोते को कहते हैं और इसी कारण बाद में फिर मुनि 'शुकदेव, के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुए। यह कथा भगवती पार्वती तथा भगवान शंकर का संवाद है। यह परम-पवित्र कथा लोक व परलोक का सुख देने वाली हैं। शंकर भगवान और जगतमाता के इस सम्वाद का वर्णन भृगु सहिता, नीलमत पुराण, तीर्थ संग्रह आदि ग्रन्थों में पाया जाता है। हम यहाँ पर आपके सम्मुख यह परम पवित्र कथा विस्तार पूर्वक रखेंगे।

देव ऋषि नारद का कैलाश पर्वत पर आना और श्री पार्वतीजी से पूछना कि भगवान शंकर के गले में रुण्डमाला क्यों है ?

एक बार देव ऋषि नारद कैलाश पर्वत पर भगवान श्री शंकर के स्थान पर दर्शनार्थ पधारे। भगवान श्री शंकर उस समय वन विहार के लिए गये हुए थे और भगवती पार्वती यहाँ पर विराजमान थीं। श्री पार्वतीजी ने देव ऋषि नारद को प्रणाम किया और सादर आसन दिया। और बोलीं— 'देव ऋषि ! आपने यहाँ पधार कर हम पर बड़ी कृपा की अपने आने का कारण कहिए।'

देव ऋषि नारद बोला—"देवी ! मेरा एक प्रश्न है उसका उत्तर चाहता हूँ।"

श्री पार्वतीजी ने कहा—"कहिए ?"

नारद बोले—"देवी ! मुझे इस बात का बड़ा आश्चर्य है भगवान श्री शंकर जोकि हम दोनों से बड़े हैं। उनके गले में रुण्ड माला क्यों है ?

श्री पार्वतीजी बोली—'इसका कारण मैं नहीं जानती।

नारद जी ने कहा—"आप यथा समय इसका कारण भगवान श्री शंकर से पूछियेगा।'

इतना कहकर देव ऋषि नारद वहां से चले गये और उनके जाने के थोड़ी देर बाद भगवान श्री शंकर आ गये और उनके आने पर भगवती पार्वती ने वही प्रश्न उनसे किया।

भगवान श्री शंकर बोले—'हे पार्वती ! तुम यह प्रश्न न पूछो।''

लेकिन श्री पार्वतजी ने भगवान श्री शंकर की बात नहीं मानी और उनके रुण्डमाला धारण करने के लिए हठ करने लगीं। इस पर भगवान श्री शंकर ने कहा—"पार्वती ! जितने मुण्ड तुमको इस मुण्डमाला में दिखाई दे रहे हैं यह तुम्हारे ही सिर है यानी जितने जन्म अब तक धारण किए हैं उतने ही मुण्ड मैंने धारण किए हैं।''

इस पर पार्वती जी ने प्रश्न किया—'प्रभो ! मेरी तो मृत्यु होती है और आपकी नहीं होती इसका कारण क्या है ?

भगवान श्री शंकर बोले—"यह सब अमर कथा के कारण है ?"

पार्वती बोली—"तो फिर मुझे भी यह अमर कथा सुना दीजिए ना।'

इस पर श्री शंकर जी ने आसन लगाया और कालाग्नि रुद्र नामक एक गण प्रकट किया और उसे आज्ञा दी—"चहुँ ओर एक ऐसी अग्नि प्रगट करो जिसमें कि जलकर समस्त जीवधारी मर जावें।''

श्री शुकदेव का जन्म की कथा

भगवान शंकर की आज्ञा पाकर कालाग्नि ने ऐसा ही किया और अदृश्य हो गया। जिस आसन पर भगवान श्री शंकर बैठे थे उसके नीचे एक तोते का अण्डा पहिले से ही था जो कि कलाग्नि को दिखाई नहीं दिया। इसके पश्चात् भगवान श्री शंकर नेत्र मूंद कर, एकाग्रचित हो पार्वती जी को अमर कथा सुनाने के साथ ही उस अण्डे में से जीव प्रकट हुआ। श्री पार्वतीजी तब तक हुँकारा देते-देते सो चुकी थी। अब उसके स्थान पर तोता हुंकारा देने लगा। जब भगवान शंकर अमर कथा समाप्त कर चुके तो श्री पार्वतीजी की आंखें

श्री खुलीं भगवान श्री शंकर ने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने अमर कथा सुनी है। श्री पार्वती ने उत्तर दिया कि अमर कथा नहीं सुनी। इस पर भगवान श्री शंकर ने पूछा—"तब हुंकारा कौन देता था?"

पार्वती जी बोली—'मुझे नहीं मालूम।'

तब भगवान श्री शंकर ने इधर-उधर देखा तो उनको एक तोता दिखाई दिया जो कि उनके देखते ही देखते उड़ गया। भगवान शंकर उठकर पीछे दौड़े। वह तोता उड़ता-उड़ता तीनों लोकों में गया लेकिन उसको कहीं जगह नहीं मिली। श्री व्यास देव की पत्नी अपने घर के द्वार पर बैठी जम्हाई ले रही थी, बस तोता उनके पेट में चला गया। भगवान श्री शंकर ने कहा—'व्यास जी मेरा चोर आपके घर में है।'

महर्षि व्यास बोले 'प्रभो! हमारे घर में तो कोई नहीं है।'

भगवान श्री शंकर के कहने पर महर्षि व्यास जी ने अपनी पत्नी से पूछा उसने उत्तर दिया-"ऐसा जान पड़ता है जैसे कि मेरे पेट में कोई पक्षी गया है।

महर्षि व्यास जी ने यह बात भगवान श्री शंकर से कही और साथ ही कहा—'आपकी जैसी इच्छा हो वैसा कर सकते हैं। लेकिन यह तो आप जानते ही हैं कि स्त्री को मारना पाप है।'

श्री वेद व्यास की यह बात सुनकर श्री शंकर लौट गये। वह तोता कई वर्षों तक ऋषि पत्नी के पेट में रहा। लेकिन जब ऋषि पत्नी के पेट का कष्ट अधिक बढ़ता गया तो श्री वेद व्यास जी ब्रह्माजी और उसके पश्चात श्री विष्णु के पास गये। फिर तीनों मिलकर भगवान श्री शंकर के पास गये। इसके पश्चात चारों श्री वेदव्यासजी के स्थान पर आए और पक्षी की स्तुति करने लगे। पक्षी जो, भगवान श्री शंकर जी से अमर कथा सुनकर चारों वेदों तथा अठारहों पुराण का ज्ञानी हो गया था, कहने लगा—"जब तक जगत निर्मोही नहीं होगा, तब तक मैं मां के पेट से बाहर नहीं निकलूंगा।' इस पर भगवान विष्णु ने अपनी माया से जगत को निर्मोही कर दिया। इस पर वह तोता बालक रूप होकर मां के पेट से बाहर आ गया और उसका नाम शुकदेव हुआ। श्री शुकदेव अपने जन्म के साथ ही सबको प्रणाम करके जंगल की ओर चल दिये : और फिर भगवान विष्णु ने अपनी माया हटा दी और जगत पुन:

मोहयुक्त हो गया। इस पर श्री वेदव्यास जी अपने पुत्र के लिए व्याकुल होकर श्री शुकदेवजी के पीछे जंगल में दौड़े और उनके पास पहुँचकर उनसे घर चलने के लिए कहा। श्री शुकदेव जी ने कहा—"जगत निर्मोही है। यहाँ न कोई किसी का पुत्र है और न कोई किसी का पिता।"

श्री वेदव्यास जी बोले—'अब ऐसा नहीं है।'

श्री शुकदेवजी ने ध्यान लगा कर देखा तो मालूम हुआ कि भगवान श्री विष्णु ने मेरे साथ छल किया है। इस पर उन्होंने श्री वेदव्यासजी से कहा—

जब तक मैं गुरु धारण नहीं कर लूंगा, वापिस घर नहीं जाऊंगा और गुरु धारण करने के बाद मैं घर आकर आपकी सेवा करूंगा।'

श्रीशुकदेव का महाराज जनक को गुरु धारण करना

शुकदेव जी फिर इस संसार में गुरु की खोज में इधर-उधर घूमने लगे। मगर अपने से बढ़कर ज्ञानी उनको कहीं पर नहीं मिला। इस पर वह श्री वेदव्यासजी की आज्ञा से महाराज जनक के पास गये। लेकिन महाराज जनक के पास कर्म, स्त्री व राजपाट के कारण उनको ग्लानि हुई। लेकिन राजा जनक ने जब उनका यह हाल देखा तो अपनी माया से उन्होंने सारे नगर को भस्म कर डाला, राजभवन भी भस्म होने लगा, लेकिन राजभवन के जलने से महाराज जनक और पत्नी का चित्त ग्लायमान नहीं हुआ। किन्तु श्री शुक देव जी का चित्त व्याकुल होने लगा। शुकदेव जी को अमर कथा के सुनने तथा अपने अमर हो जाने का अभिमान था उनकी व्याकुलता को देखकर महाराज जनक बोले—"आप क्यों घबरा रहे हैं आप तो अमर हैं। लेकिन हमारा शरीर अवश्य जलेगा इस पर भी जब श्री शुकदेव जी की व्याकुलता दूर न हुई तो महाराज जनक ने अपनी माया से अग्नि पुन: शान्त कर दी और प्रत्येक वस्तु पूर्ववत् हो गई। यह देख कर श्री शुकदेव जी ने महाराज जनक को अपना गुरु बना लिया और उनसे उपदेश लिया।

इसके बाद श्री शुकदेव की नैमिषार गये वहां पर ऋषियों महर्षियों ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया। ऋषियों-महर्षियों ने आपसे अमर कथा सुनाने के लिए प्रार्थना की। श्री शुकदेव जी बोले इस कथा के सुनने वाले

अमर हो जाते हैं। इसके पश्चात उन्होंने कथा सुनानी आरम्भ की। कथा के आरम्भ के साथ ही कैलाश क्षीरसागर और ब्रह्मलोक हिलने लगे,, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा समस्त देवता उस स्थान पर पहुँचे जहां पर अमर कथा हो रही थी। भगवान शंकर को स्मरण हुआ कि यदि इस कथा के सुनने वाले अमर हो गये तो पृथ्वी का संचालन बन्द हो जायेगा और फिर देवताओं की प्रतिष्ठा में अन्तर आ जायेगा इसलिए भगवान श्री शंकर क्रोध में भर आये और श्राप दिया कि जो इस कथा को सुनेगा वह अमर नहीं होगा, हां वह शिव लोक अवश्य प्राप्त करेगा।'

●

कथा

श्री पार्वती जी ने कहा—

आधुना श्रोतुमिच्छामि यात्राममरनाथजाम।
यां श्रुत्वा मुच्यते जन्तुर्जन्मान्तरकृतैरवैः॥
पुनश्च रसलिङ्गस्य माहात्म्य वक्तुमर्हसि।
अङ्ग भूतानि तीर्थानि यान्यत्र जगदीश्वर॥
तत्पूजा तद्विधिश्चैव वनस्व दयया प्रभो!
यात्रामकृत्वा देवस्य यो लिग पश्यति प्रभो॥
स का गति प्रयातीह वद शीघ्र दयानिधे।

प्रभो! मैं अमरनाथ की यात्रा की महिमा सुनना चाहती हूँ, जिसके सुनने से जन्म जन्मान्तर के पाप-ताप मिट जाते हैं। जगत स्वामिन्! आप श्री अमरनाथ जी के लिंग का महात्म्य तथा मार्ग के तीर्थों का वर्णन किजिए श्री अमरनाथ की यात्रा तथा पूजन की विधि भी कहें और यह भी बतायें कि जो शास्त्रोक्त यात्रा को त्यागकर केवल लिंग के ही दर्शन करता है वह किस गति को प्राप्त होता है।

भगवान श्री शंकर ने कहा—

यात्रामम्रमरनाथस्य कृत्वा शुद्धिमवाप्नुयात् ।।
बाह्याभ्यन्तरशुद्धस्तु रसलिंगस्य दर्शने ।
चतुर्वर्गफलादानम् क्षमो भवति पुरुषः ।।
यात्रान्तः प्राप्यतीर्थौघमनासेव्यतु यो नरा ।
वैयात्यमरक्षेत्रेऽपि तस्य यात्राऽफला भवेत ।।

मनुष्य श्री अमरनाथ जी की यात्रा करके शुद्धि को प्राप्त करता है तथा शिवलिंग के दर्शनों से भीतर बाहर से शुद्ध होकर धर्म, अर्थ, काम बचन तथा मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है वह मनुष्य जो कि मार्ग के तीर्थों पर यथाविधि स्नान दान इत्यादि न करके सीधा गुफा ही में पहुंच जाता है उसकी यात्रा निष्फल समझो ।

ऊर्ध्वाधोगमनाद्देवि ! द्विधा यात्रा प्रदर्शिता ।
ऊर्ध्वयात्रा मुमुक्षूणां प्राणामेन योगिनाम ।।
अपानप्राणयोरैक्ये राजमार्गेण वै गते ।
ब्रह्मद्वारविलीनेऽत्र मुक्तिर्भवति निश्चता ।।
यथेष्टकामदा यात्रा द्विधा सेव्या फलेप्सुभिः ।
बाह्या घोयात्रया पाप-क्षये शुद्धः पुमान्यदा ।।
अधिकारी भवेत् सद्यः 'हठराजादियोगतः ।
तीर्थेऽमरकथां श्रुत्वा शिवप्रोक्तां मनीषितः ।।
तदुक्तमार्गगो यः स्यादमरो निश्चित भवेत् ।
तत्रादौ संप्रवक्ष्यामि अधोयात्रञ्च पुण्यदानम ।।

भगवान शंकर बोले—

"हे देवी ! दो प्रकार की ऊपर तथा नीचे की यात्रा है । ऊर्ध्व (ऊपर) की यात्रा मोक्ष चाहने वाले योगियों को प्राणायाम द्वारा होती है । प्राण तथा अपान वायु के एक होने पर योग मार्ग दशम द्वार अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र में प्राणों को लीन करने से निश्चय ही मोक्ष की प्रगति होती है वह दोनों प्रकार की यात्रा धर्म-अर्थ काम तथा मोक्ष के इच्छुकों को करनी चाहिए अधो

(निचली) यात्रा यानी पैदल यात्रा से मनुष्यों के सम्पूर्ण पाप दूर होकर उसका चित्त निर्मल हो जाता है। और इसी तरह हठ योग यथा राज योग से तथा तीर्थ पर किसी अच्छे विद्वान पंडित द्वारा अमर कथा सुनने से पुरुष ज्ञान का अधिकार हो जाता है। इस तरह कहे गये के अनुसार यात्रा करने वाले मनुष्य मुक्ति को प्राप्त करते हैं। अतः पुण्य देने वाली आगे यात्रा का वर्णन किया जाता है।

श्रीपुरे गणप नत्वा संकल्पयैव ससार्थकः।
सांप्रदायिकरीत्या वै चतुष्कादौ शिवं भजन्॥
निर्गत्य नगरादादौ तीर्थे षोडशसंज्ञके।
स्नात्वा शिवपुरं गच्छेद्दुषपृश्य ततः परम्॥

श्रीनगर में विघ्नों का नाश करने वाले श्री गणेश जी की पूजा करके रीत के अनुसार भगवान श्री शंकर का स्मरण करता हुआ, नगर से बाहर निकल कर षोडश तीर्थ पर स्थान तथा आचमन करके शिवपुरी की ओर बढ़े।

पुण्ये गंगाम्भसि स्नात्वा पद द्रष्टौ प्रणतः प्रिये।
तत्राचर्येन्महादेवं तर्पयेद्भोजयेत्तथा॥
देवनृषीन द्विजान्हेमगोवस्त्रान्न विसर्जयेत्।
ततः पद्मपुरे सिद्धक्षेत्रे स्नात्वाऽग्रतो व्रजेत्॥
वाग्शि रुद्र गङ्गाख्ये स्नात्वा दत्वा व्रजेत्ततः
युवत्यां तत्र मिष्टोदे स्नात्वाऽथावन्तिकां श्रयेत्॥

प्रिय ! वहां गंगाजी का दर्शन और प्रणाम करके भगवान श्री शंकर का पूजन देवता और ऋषियों का तर्पण वा ब्राह्मणों को भोजन करवायें। सोना, अन्न, वस्त्र आदि दान देकर विसर्जन करें। फिर पद्मपुर में जो सिद्धों का क्षेत्र है वहां पर स्नान करके और दान देकर युवती तथा मिष्टो (मिठवन्य) तीर्थों पर स्नान करके अवन्तीपुर (वांतीपुर), को चलें।

तत्रस्नात्वा सिद्धक्षेत्र महानागं समाश्रयेत्।
हरिद्राख्यं गणपतिं नत्वा विघ्नेश्वरार्चनम्॥

कृत्वा देवानृषीन पितृंस्तर्पयेद्विधिवन्नरः ।
हव्यकव्यादिभिः सर्वे विघ्नाः पापनि च प्रिये ।।
तत्क्षणान्नाशमायान्ति गणनाथप्रसादतः ।
बलिहारे ततो पायात् क्षेत्रे स्नात्वा व्रजेत्ततः ।।

वहां साधु महात्माओं के क्षेत्र में स्नान करके बहन्वाग (मिहरनाग) जाकर हरी पांरा गांव में हरिदाख्य गणपति विघ्नों के नाश करने वाले श्री गणेश जी का पूजन करे और देवताओं तथा ऋषियों का तर्पण करें। देवताओं तथा पित्रों का तर्पण करने से तथा दान करने से श्री गणेश की कृपा से मनुष्य के समस्त विघ्न तथा पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके बाद बलिहार क्षेत्र (बहियार ग्राम) में स्नान करके आगे बढ़े।

ज्येष्ठाषाढं महादेवं पूजयेद्गणनायकम् ।
नागाश्रमे हस्तिकर्णे नत्वोपस्पृश्य च व्रजेत् ।।
स्नात्वोपस्पृश्य वा वारि तदीयं त्रिमलापहम् ।
ततो गच्छेच्चक्रतीर्थे स्नात्वा देवर्षितर्पणम् ।।
तत्र कृत्वाहेममयं चक्रं दद्याद् द्विजन्मने ।
हुत्वा जप्त्वा च विधिवद् व्रजेदेवकतीर्थकम् ।।

नागाश्रम (बागहांन) में जिसको, कि हस्तिकर्ण कहते हैं, संगम के समीप जाकर ज्येष्ठाषाढ़ नामक गणस्वामी भगवान श्री सदाशिव का पूजन करके आगे चलें। तीनों तापों तथा मलों का नाश करने वाले तीर्थ जल मे स्नान या आचमन करके चक्र नामक तीथ (चक्रधर) पर जाकर स्नान करके देवताओं तथा ऋषियों का तर्पण करें और सोने का चक्र बना कर ब्राह्मण को दान देवें। फिर विधिवत् हवन तथा जप करके देवें। फिर विधिवत् हवन तथा जप करके देवक तीर्थ (देवकयार) की ओर चलें।

तत्र स्नात्वा हरिश्चन्द्रं तीर्थपुण्यं समाश्रयेत् ।
तत्र स्नात्वार्चयेद्देवं महादेवं वृषध्वजम ।।
देवानृषीन पितृश्चैव तर्पयेद्धव्यकव्यकैः ।
गां हिरण्यंतिलानवस्त्रं भक्ष्यंभोज्यं च शक्तितः ।।

दद्यांत्पात्रेषु ब्रह्माण्डं तर्पितं तेन सम्भवेत् ।
ततो भुक्त्वा च देवेशि तीर्थं नत्वा सुरेश्वरि ॥
तत्र लम्बोदरी वारि स्नानं कुर्य्यादतन्द्रितः ।
स्थलवाटं ततो गच्छेत्तत्रस्नात्वामृस्तुती ॥
ततो व्रजेत सूर्यस्य गुहावटं सुरेश्वरी ।
सूर्याश्रमे सूर्यगगामवगाह्य समर्चयते ॥

और फिर वहां स्नान करके हरिश्चन्द्र तीर्थ (विजय बिहार, बीज बिहारा पहुँच कर स्नान करें तथा वृषभ ध्वज महादेवजी का पूजन कर हव्य कव्य आदि से देवताओं और ऋषियों का तर्पण करें। गऊ सवर्ण, तिल और भोजन यथा शक्ति सत्पात्र ब्राह्मण को दान देवें। ऐसा करने से मनुष्य को ब्राह्मण को तृप्त करने के फल की प्राप्ति होती है। हे देवी ! इसके पश्चात भोजन करे और तीर्थ को नमस्कार करके आगे चले और लम्बोदरी नदी पर आलस्य रहित होकर स्नान करके थुजवार ग्राम से भगवान श्री सदाशिव के दर्शन करें। इसके बाद सूर्य क्षेत्र (मार्तण्ड भवन—मटन) में सूर्य कुण्ड (सूर्य गंगा) में स्नान करके भगवान भास्कर का दर्शन करें।

श्री सूर्यनारायण का पूजन

भुक्ति मुक्तप्रदं सूर्यं गामश्वं कनकं तथा ।
अन्नानि वसनीयानि द्विजेभ्यः प्रतिपादयेत ॥
सूर्यक्षेत्रन्तु पितृणां दुखितानां स्वकर्मतः ।
तेषामुद्धारणार्थाय प्रार्थितं मुनिभिः सुरैः ॥
तत्र कुर्य्यात पितृमुक्तिं पिण्डैदानादिभिः प्रिये ।
कुडद्वयं समालोक्य मत्स्यरूपानसुरानपि ॥
अन्नैर्नानाविधैभक्तया स्नात्वा तृप्तान् विधाय तान् ।
श्राद्धं पश्चिमवाहिन्यां तत्र कुर्य्याद्धि मानवः ॥

श्री सूर्यनारायण के दर्शन करके तथा उनका पूजन करें। भगवान श्री सूर्यनारायण का पूजन संसार के समस्त भोगों तथा मुक्ति को देने वाला है। यात्रियों को सूर्य क्षेत्र में अन्न वस्त्र आदि का दान ब्राह्मणों को देना चाहिए यह सूर्य क्षेत्र (मटन) तीर्थ अपने कर्मो से दुखी हुए पितरों के उद्धार के लिए

उत्तम है ऐसा देवताओं का ऋषियों महर्षियों का मत है। हे देवी ! यहां पर पिण्डदान आदि से पितरों का उद्धार करें। दोनों कुन्डों का दर्शन करें और फिर उनमें मत्स्य रूप देवताओं का दर्शन कर और फिर उनको नाना मन्त्रों से तृप्त करें। पश्चिम दाहिनी गंगा में स्नान करके पितरों के उद्धार के लिए श्राद्ध करें।

ततः सत्कारमासाद्यः स्नात्वा तत्तीर्थं वारिणि।
सम्पूज्य चात्र गणरा व्रजेद्भद्राश्रमं ततः ॥
हयशीर्षाश्रमे पुण्ये तथा श्वतरनागजे।
सौरगङ्गा जले स्नात्वा कृतनित्य क्रियाद्विजाः ॥
गच्छेत्सरलके ग्रामे जलेऽनन्तस्यापावने।
तत्र स्नात्वः ततो गच्छेत् बालकल्यायन परम् ॥

इसके बाद सत्कार (साकरस)स्थान में पहुँचे स्नान करें और श्री गणेश जी का पूजन करें और फिर भद्राश्रम में जायें। फिर परम पवित्र हयशीर्ष (सिलगाम) आश्रम में तथा स्वश्वतर क्षेत्र में और गंगाजल में स्नान करके संध्या बंदन आदि नित्य क्रिया करें।

(सरलक सलर) ग्राम में पहुँच कर पवित्र अनन्त नाग तालाब के जल में स्नान कर उत्तम बालखिल्य आश्रम (ख्यिलन) को जाना चाहिए।

बाल खिल्य तीर्थ का महात्म्य

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि माहात्म्यं पापनाशनम्।
बालखिल्यायनस्यैव चित्तशुद्धकरं परम् ॥
पुरामहर्षयः सिद्धाः बालखिल्याभिधाः शिवे।
सुदुष्करं तपश्चेरुः नियमेनोर्ध्वरेतसः ॥

हे देवी ! अब मैं पाप ताप को हरने वाले तथा चित्त को शुद्ध करने वाले बालखिल्य तीर्थ का महात्म्य कहता हूँ। ध्यानपूर्वक सुनो। पूर्वकाल में बालखिल्य नामक महर्षियों ने घोर तप किया।

उवाच तां तदा विष्णुमर्घगम्भीरया गिरा।
तपसानेन तुष्टोऽस्मि दरयध्वं वरं शुभम् ॥

श्रुत्वा तेषां वचः सौम्यमानन्दाश्रु परिलुप्तः ।
दृष्टि पदोः समाधाय गंगा समुदचालयत् ॥

फिर भगवान श्री विष्णु ने मेघ सदृश गंभीर वाणी से कहा 'मैं तुम्हारे तह से अत्यधिक प्रसन्न हूँ अतः तुम वर मांगो ।

ऋषियों की प्रार्थना सुनकर भगवान श्री विष्णु ने अपने चरणों से धरती को छूकर वहां से गंगा को प्रकट किया ।

आभूतसंप्लवं यावत्तावत्परमपावनम् ।
बालखिल्याभिधं तीर्थं भविष्यन्ति न संशयः ॥
म्रियते धूतपापः सन् स्वर्गलोके महीयते ।
खिल्याने महापुण्ये विष्णोस्तीर्थेह्यनुत्तमे ॥

और उसके साथ ही साथ उन लोगों को यह वरदान भी दिया प्रलय पर्यन्त बालखिल्य तीर्थ लोगों को पवित्र करता रहेगा । पवित्र और पुण्य खिल्यायन तीर्थ पर मनुष्य स्नान, दान तथा जप पूजा करें तो उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

तत्र नारायणं देवमर्चयेच्च जगद्गुरुम् ।
अनन्तभोगमोक्षेष्ट साधनं विश्वव्यापिनम् ॥
स्नात्वा तत्क्षेत्रपुण्योवै दानं दत्वा स्वशक्तितः ।
महावने भीमरूपं विघ्नेशं समुपाश्रयेत् ॥

उस बालखिल्य तीर्थ पर जगद्गुरु सर्वव्यापी नारायण का पूजन करें जो कि नाना प्रकार के भोगों तथा मोक्ष के प्रदान करने वाले हैं । तीर्थ पर स्नान और यथा शक्ति दान देकर महावन (गणेशबल) (गणेशबल पहलगाम में है) में श्री गणेशजी का पूजन करें ।

नत्वा हुत्वा च विधिवन्मोदकैः पायसैस्तथा ।
बलि निवेदयेद्भक्तया श्री गणेशाय सुन्दरि ! ॥

हे सुन्दरी! श्री गणेशजी को नमस्कार करके लड्डुओं तथा क्षीर का भोग लगावे ।

मामलेश्वर तीर्थ की उत्पत्ति की कथा

प्रशान्तपापविघ्नोऽथं क्षेत्रं मामेश्वरम व्रजेत् ।
दृष्टवा मामेश्वरं लिगं स्नात्वा मामेशवारिणि ।।
तत्क्षणान्मुच्यते साध्वि रोगेभ्य: पाप सञ्चयात् ।
हुत्वा दत्वा च विधिवत् ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ।।

पाप तथा विघ्नों से रहित होकर मामेश्वर (मामलेश्वर) क्षेत्र को जावे हे साध्वी ? मामलेश्वर भगवान के दर्शन या तीर्थ जल में स्नान करके मनुष्य रोगों तथा पापों से छूट जाता है। यहां पर स्नान करने के पश्चात मनुष्य दान करे तथा ब्राह्मणों को भोजन करवायें।



मामलेश्वर तीर्थ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कथा सुनो—

एक समय भगवान श्री सदाशिव श्री गणेश जी का दोनों ड्योढियों का द्वारपाल बनाकर आप स्थलबाद को चले गये थे। वहां पर थोड़ी देर ठहर कर खिल्यायन से ऊपर दण्डक मुनि के आश्रम जाकर विश्राम करने लगे। वहां देवता आये। भगवान सदाशिव ने कहा—"आगे मत बढ़िये।" इस शब्द को सुनकर गणेश जी पाताल देश से आए और उन्होंने भी यही शब्द कहे और इस शब्द से फिर देवता भगवान श्री सदाशिव मे लीन हो गए अतः फिर

यह ग्राम 'मामल' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भगवान श्री सदाशिव ने श्री गणेश जी से कहा "तुम मामल" शब्द सुनकर पाताल से यहाँ आये हो अतः दीर्घकाल तक यहाँ ठहरो और समस्त विघ्नों को दूर करो।'

यः कश्चिन्मानवो लोके अत्र त्वां पूजयिष्यति ।
सर्वान् विघ्नान विनिर्जित्य सिद्धि समधिच्छति ।।
इति दत्वा वरां देवो गणेशाय स्वयं शिवः : ।
पुण्येवै दन्डकारण्ये लीनो मामेश्वरः प्रभुः ।।

जो मनुष्य यहां पर तुम्हारा पूजन करेंगे वह परम सिद्धि को प्राप्त करेंगे। यह वरदान श्री सदाशिव जो श्री गणेश जी को देकर दण्डकारण्य में अन्तंध्यान हो गए।

दृष्टवा मानेश्वरं लिगं पुण्ये मामलके नरः ।
पूजयित्वा गणपतिम श्वमेधफलं लभेत् ।।
सर्वान्कामानवाप्नोति पशुपुत्रधनानि च ।
यात्रा साफल्यमाप्नोति गणेशस्य प्रसादतः ।।

मनुष्य को पवित्र मामलक (ग्राम) में मामेश्वर का दर्शन करने और श्री गणेश जी का पूजन करने से अश्वमेध का फल मिलता है। श्री गणेश जी की कृपा से मनुष्य की सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण होकर उसे पशु पुत्र तथा धन की प्राप्ति होती है और उसकी यात्रा भी सफल हो जाती है।

भृगुपति तीर्थ

ततो व्रजेद्भृगुशतेः क्षेत्र सर्वमलापहम् ।
स्नात्वा दत्वा च विधिवत्तत्र सम्पूजयेद्धरिम् ।।

इसके पश्चात समस्त पापों को मिटाने वाले भृगुपति तीर्थ जाकर वहाँ विधिवत स्नान तथा दान करके भगवान श्री हरि का पूजन करें।

नोट—भृगुपति तीर्थ (पहलगांव में डाक बंगला के समीप है)

भृगुजी ने परिशीलन वन में दीर्घकाल तक बड़ा भारी तप किया था। ऐसा कठिन तप जो कि देवता भी न कर सकते थे। इसी बीच में भगवान श्री विष्णु देवताओं के साथ महर्षि भृगुजी के दर्शनों के लिए आये। भृगुजी ने

अपने आसन पर से उठकर उनको प्रणाम किया और सदैव एक रस रहने वाले भगवान श्री विष्णु ने उनके सिर को चूमकर उनको गले से लगा लिया।

आलिंगितुरन्योन्यं भृगु विष्णु महेश्वरि ! ।
तदङ्गजा'त प्रस्वेद जलैः परमपावनैः ।।

पुण्यतीर्थम् भूद्देवि ? परिशील बने शुभे ।
भृगोरालिङ्ग नाद्यस्माद्धरि स्वेद समुद्भवम् ।।

पुण्यं सुप्रथित लोके भृगुतीर्थं महेश्वरि !
तत्र स्नात्वा ताम्रदानं वस्त्रदानच्च मानवः ।।

करोति सफला यात्रा तस्य सत्यन्न संशयः ।
भृगुतीर्थे नरः स्नात्वा पुण्य प्राप्नोत्यसुत्तामम् ।।

हे माहेश्वरी ! भृगु और विष्णु भगवान ने आपस में आलिंगन किया। उनके शरीर में स पवित्र पसीना निकला जिससे वह पवित्र तीर्थ बना।

श्री सदाशिव बोले—

"हे देवी !" क्योंकि यह तीर्थ भृगु के पसीने से बना है अतः इसका नाम भृगु तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। यहाँ पर जो मनुष्य स्नान करके ताँबे तथा वस्त्र का दान करेगा उसकी यात्रा निसन्देह सफल होगी मनुष्य वह स्नान करने से अति उत्तम पुण्य को प्राप्त होता है।

श्री लम्बोदर की कथा

एक बार कैलाश पर्वत पर भगवान श्री सदाशिव श्री पार्वती जी ज्ञान सम्बन्धी बातचीत कर रहे थे। उन्होंने श्री गणेशजी को द्वारपाल बनाकर उनसे कह रखा था कि किसी को अन्दर मत आने देना। इतने में देवराज इन्द्र देवताओं सहित वहां आया गणेश जी ने उनको रोका इस पर दोनों में बड़ा भारी युद्ध हुआ। इन्द्र हार गया।

इन्द्र कोपाद् गणेशो वै तृषितः क्षधितोऽपिच ।
भुक्तास्वादु फलान्यत्र पपौ गंगा सपुष्कलाम् ।।
पीत्वा गगांस विघ्नेशस्तदा लम्बोदरोऽभवत् ।
लम्बोदरेति नाम्ता वै आजुहाव हस्तदा ।।

इन्द्र के साथ लड़ने से श्री गणेश जी को बहुत ज्यादा भूख व प्यास महसूस हुई। चुनांचे बहुत स्वादिष्ट फल खाकर बहुत सा गंगाजल पीने से श्री गणेश जी का पेट बढ़ गया। तब भगवान श्री सदाशिवजी श्री गणेश जी को लम्बोदर के नाम से पुकारने लगे।

शुष्कां द्रष्ट्वा तु गंगा तां हरो गणपतेः प्रिये !।
क्रोधेनाभ्युदरन्तस्याऽहनड्डमरुणा शिवे !॥
अवमन्मुखतो गंगा तदा गणपतेः प्रिये।
यस्माल्लम्बोदरात्तस्य आह्वीसा विनिःसृताः॥
लम्बोदरी जल स्पर्शः कोटि जन्माघनाशनः।
करणीयो महादेवि ? मामलेशस्य सन्निधौ॥

हे देवी ! भगवान श्री सदाशिव ने गंगा को सूखा हुआ देख श्री गणेश जी के पेट पर, क्रोध में भरकर डमरू से चोट की। फिर गगा उनके पेट में से निकलकर बहने लगी और पौराणिक ने उसका नाम लम्बोदरी प्रसिद्ध किया।

हे प्रिय ! लम्बोदरी नदी के जल का स्पर्श कोटि जन्मों के पापों का नाश करता है। इसीलिए मामलेश्वर के पास इस नदी का स्पर्श करना आवश्यक है।

ततो गत्वा रञ्जिवने पश्येद्वर्तुलाकारकोपलम्।
स्नानं कृत्वा ततः सीताराम लक्ष्मण कुण्डके॥

इसके पश्चात् रन्जिवन में गोलाकार पत्थर की देव मूर्ति का दर्शन करे और वहां से सीताराम कुण्ड में स्नान करके आगे बढ़े।

रञ्जनोपल

रंजनाख्यं तदा प्राप्य बनं दैत्यान्मोदोत्काटनः।
विचरन्तो बनं पुण्यं रामः सीता च लक्ष्मणः॥
तान दृष्ट्वा स्वेदसंयुक्ता बभूवू रंजने बने।
तत्स्वेदंजलसम्भूताः कुन्डस्तत्र शरानपि॥

सीता, लक्ष्मण तथा राम ने विचरते-विचरते रञ्जनख्य पवित्र वन में

आकर मदयुक्त राक्षसों को देखा इससे उनको पसीना आ गया और उनका वह पसीना कुण्डों में पड़ने से यह कुन्ड परम पवित्र हो गये।

गृहीत्वाऽश्गनि चारुह्य चकर्त दैत्यपुंगवान् ।
शेषा भीताः पलायन्ते रामचन्द्र शरार्दिताः ।।
तद्रक्तपाताद्रक्तः सः गण्डशैलो ह्यनुत्तमः ।
रामपादरबिन्दस्य स्पर्शनात्पावनः स्मृतः ।।

भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज पाषाण पर चढ़कर बाणों से राक्षसों को समाप्त करने लगे। बहुत से राक्षस मारे गये और बाकी के इधर-उधर भाग गये। उन राक्षसों का खून गिरने से वह गंडशैल (छोटी पहाड़ी) रंगीन हो गई और भगवान् श्री रामचन्द्र जी महाराज के चरण स्पर्श से दूसरों को पवित्र करने वाला हो गया।

पापैर्मुक्तो भवेद्यत्र रंजनीपलदर्शनात् ।
कुन्डे स्नानञ्च कृत्वाऽत्र पापबन्धात्प्रमुच्यते ।।

इस रन्जनोपल के दर्शन से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है और कुन्ड में स्नान करने से समस्त पापों से छूटकर मुक्त हो जाता है।

स्थानु आश्रम (चन्दनबाड़ी)

ततो गत्वा नीलगङ्गा तीर्थोदमवगाह्य च ।
प्रसन्नचित्तवृत्तिश्च ततः स्थाण्वाश्रमं व्रजेत् ।।

इसके बाद नील गंगा में स्नान करके प्रसनचित्त हो स्थानु आश्रम (चन्दनवाड़ी की यात्रा करें।

एकदा क्रीडतस्तस्य शिवस्य वरवर्णिनि ! ।
देव्याः सौरतसंलापैरन्यैः क्रीडनकैरपि ।।
अक्षिणी चुम्बतस्तस्य पार्वत्या वरदायिनि ।
कालञ्जानाक्तं वदनं समभूतस्य सुन्दरि ! ।।

हे देवी ! एक बार काम, क्रीडा तथा खेल की बातों में भगवान श्री सदाशिव का मुख श्री पार्वती जी के नेत्रों के साथ लग गया। हे सुन्दरी ! तब उनका मुख अंजन के कारण काला हो गया।

दृष्ट्वांजाङ्कितं वदनं स्वं देवो भगवान् हरः ।
तदा प्रक्षालयामास गंगायो वदनं शिवः ।।
सवै गंगा समुत्पन्ना कालांजननिभाऽभवत् ।
नीलगंगेति विख्याता महापातक नाशिनी ।।

फिर भगवान् श्री सदाशिव जी ने सुरमे से काला देखकर उसे श्री गंगा जी में धोया, जिससे गंगा जी का रंग काला पड़ गया अतः गंगा का नाम नील गंगा प्रसिद्ध हो गया । यह नदी महा पापों को नष्ट करने वाली है ।

नीलगङ्गाजलस्पर्शो दोष संसर्गतोऽसषाम् ।
स्त्रीणामात्मविकारादीन् नाश स नयतिध्रुवम् ।।

नील गंगा का स्पर्श दुष्ट मनुष्यों के साथ रहकर जो दोष प्राप्त हुए हों, उन्हें तथा स्त्रियों के मन के विकारों का नाश करता है इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं है ।

यह नील गंगा पहलगांव से ६।। मील चन्दनवाड़ी के मार्ग में है ।

पुरा चचार सुमहत् तपो हैमवने नगे ।
गिरीशो दक्षतनुजा विश्लेषिततनुः शिवः ।।
सेवा परा स्थिता तत्र चिरं देवी महेश्वरी ।
न चाचालात्मध्यानाद्धि तपसि स्थाणुसंस्थितः ।।

पूर्वकाल में भगवान श्री सदाशिव दक्षप्रजापति की पुत्री सती का वियोग हो जाने पर हिमालय पर कठिन तप करने लगे । महेश्वरी फिर वहां पर बहुत वर्षों तक सेवा करती रही ।

सती ने पर्वतराज के यहां जन्म लेकर पार्वती का रूप पाया । यह तपस्या करने के पश्चात् भगवान सदाशिव की सेवा करने लगीं ।

लेकिन उनकी सेवा करने पर भी भगवान श्री सदाशिव की समाधि न खुलने पाई ।

वाटिकायां चंदनानां पार्वती ह्याकुलाऽभवत् ।
स्थाणुवत् संस्थितो यत्र महेशस्तपसि स्थितः ।।

स्थाण्वाश्रम इति प्रोक्तो महापातकनाशन: ।
स्थाण्वाश्रम समीपे तु य: स्नायात् सुखन्दिते ! ।।

तब श्री पार्वती जी चन्दन वाटिका में बड़ी घबराई। जिस वाटिका में भगवान श्री सदाशिव वृक्ष के समान निश्चल रूप में तप में स्थित थे। उस वाटिका का नाम बाद में महापाप विनाशक प्रसिद्ध हुआ। हे देवी! इस स्थानु आश्रम (चन्दनवाड़ी) के पास जो स्नान करता है वह शिव धाम को प्राप्त होता है।

महापातकयुक्तो वा युतो वा ह्युपपातकै ।
स्थाण्वाश्रमवने पुन्ये मुच्यते सर्वकिल्विषै: ।।
अत्र देवार्चन कुर्वन् तिलतर्पणमेव च ।
जपंश्च मुच्यते जन्तुमहापातक कोटिभि: ।।

ब्रह्म हत्या तथा गौ हत्या आदि पाप करने वाला मनुष्य यदि चन्दनवाड़ी में स्नान करे तो समस्त पापों से छूट जाता है।

सरस्ती नदीं दृष्ट्वा स्नात्वा पापात्प्रमुच्यते ।
ततश्चोषसि पोषाख्यं गिरिमुलंघ्य पावनम् ।।

सरस्वती नदी का दर्शन करने से एवं उसमें स्नान करने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इसके समस्त यात्री को पौषाख्य पर्वत (पिस्सू घाटी) पर चढ़ना चाहिए।

पिस्सू घाटी

एक बार देवता और राक्षस भगवान श्री सदाशिव के दर्शनों के लिए आए। वह पहाड़ पर चढ़ते समय ईर्ष्या में ग्रस्त होकर कहने लगे कि हम पहले चढ़ेंगे! दोनों में युद्ध होने लगा। राक्षसों से डटकर देवताओं ने एकाग्रचित्त होकर भगवान श्री सदाशिव का ध्यान किया।

शम्भोरनुग्रहाद देवि ! पिष्ठा दैत्या सुरोत्तमै: ।
मुष्टप्रहारै: पिष्टास्ते राक्षसा यत्र सुन्दरि ! ।।
लीनांगिरौ भवन्ति स्म: यत्र ते राक्षसा: प्रिये ! ।
दैत्यदेहास्थिसंभूता तत्र राशि: सुविस्तरा ।।

प्रिय ! भगवान श्री सदाशिव जी की कृपा से देवताओं ने राक्षसों को मार-मारकर चूर्ण कर दिया। जिस स्थान पर देवताओं ने राक्षसों का चूर्ण बनाया, वहां पर उनकी अस्थियों का एक बहुत बड़ा ढेर लग गया।

स गिरिः परमोद्धार पोषाख्यः प्रथितो भुवि।
पिनिष्ट शिवभक्तानां पापरूपांस्तु राक्षसान् ॥
श्री श्री श्री श्री शितीकण्ठ इमं मन्त्र मनुस्मरन्।
स ब्रह्मसदनं याति यत्र गत्वा न शोचते ॥

और यह पर्वत यानि, पिस्सू घाटी, अब शिव भक्तों के पाप-ताप हरती है। हे देवी ! श्री ४ शितीखण्ड इस मन्त्र को जो स्मरण करता हुआ इस पहाड़ पर चढ़ता है उसको ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। यह ब्रह्मलोक जहां पर कि पाप-ताप व शोक का नाम तक भी नहीं है।

तदुपरि च शेषस्य नागस्य विधिपूर्वकम्।
दर्शनं स्पर्शनं पूजां कृत्वा गच्छेदतः परम् ॥
वायुवर्जन देशे तु विधाय मठिकां ततः।
तत्राश्रमपदे स्थित्वा संस्मरेदमरेश्वरम् ॥

इस पिस्सू घाटी पर विधिवत श्री शेषनाग का दर्शन कर तथा पूजन करके आगे बढ़ें।

वायुर्जन में पत्थरों से छोटी मढ़ी बनाकर भगवान श्री अमरेश्वर का स्मरण करें।

शेषनाग पर्वत

प्राचीन काल में इस पहाड़ पर एक बड़ा ही बलवान राक्षस वायु के समान रूप वाला रहता था। और वह यहां आने वाले देवताओं को बड़ा कष्ट पहुँचाता था। देवता भगवान श्री सदाशिव श्री महाराज के पास गये। स्तुति के पश्चात् भगवान श्री सदाशिव जी प्रसन्न हुए। देवताओं ने उनको राक्षस के सम्बन्ध में बताया। भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने कहा कि मैंने इसको वरदान दिया हुआ है जिससे मैं इसको नहीं मार सकता। तुम भगवान श्री विष्णु की शरण में जाओ। इस पर देवताओं ने क्षीर सागर के तट पर जाकर भगवान श्री विष्णु की स्तुति की। भगवान श्री विष्णु देवताओं की

स्तुति से प्रसन्न होकर बोले मैं अभी-अभी वायु रूपी दैत्य को नष्ट किये देता हूँ। तुम लोग स्वर्ग धाम को जाओ। शेषनाग जी पाताल से प्रकट हुए। उस पर भगवान श्री विष्णु सवार हुए और आज्ञा दी।

वातं ।पत्रफणीन्द्र ! त्व सहस्रवदनो लघु।
प्राणांस्तर्पय नागेश ? यतस्त्व पवननाशनः ॥

एवं भागवतं श्रुत्वा वचनं चामृतोपमम्।
प्रादुर्भूय च त दैत्यं वायुरूपं पपौ क्षणात् ॥

हे सर्पराज ! तुम सहस्र मुखों से वायु का पान करो। अपने प्राणों को इस वायु द्वारा तृप्त करो, क्योंकि तुम वायु के खाने वाले हो। भगवान के अमृत रूपी वचन सुनकर एक क्षण में शेषनाग ने देखते ही देखते वायु रूपी दैत्य को भक्षण कर लिया।

तदा प्रभृति देवेशि ! नगोऽभूच्छेषपंकजः।
स्वाश्रमेण प्यासौ नागोर्वर्णितो योगिसत्तमैः ॥

दर्शनात स्पर्शनाद स्नानात दानाद्धो माज्जपात्तथा।
स्वाध्यायस्तुतिपाठच्च ह्यनन्तपुण्यमाप्नुयात् ॥

हे देवी ! उस दिन से ये पर्वत शेषनाग पर्वत के नाम से प्रसिद्ध है। तथा योगी जन इसको अपना आश्रम भी कहते हैं। इसके दर्शन करने से तथा तालाब में स्नान करने से और यहां पर जप, हवन, स्तुति का स्वाध्याय करने से मनुष्य अनन्त पुण्य को प्राप्त होता है।

जब देवताओं ने राक्षसों को मार डाला तब उनमें से अष्टता नाम दैत्य वायु में मिलकर देवताओं को कष्ट देने लगा। इस पर समस्त देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के पास गए और उनकी स्तुति की। इस पर भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने प्रसन्न होकर कहा।

मठिकांसु च देवेशाः ! कुरुध्वं वायुवर्णनम्।
इत्यं कृत्वा ततो देवा मठिकास्तत्र प्रस्तरैः ॥

दर्शयामास तच्चोग्रं रूपं दैत्यपुरन्दरः।
दृष्ट्वा दैत्यं तूग्ररूपं वज्रमिन्द्रः समादधे ॥

हे देवताओ ! तुम लोग यहां मढ़िएं बनाकर वायु को रोक दो। इस पर

देवता वहां पर पत्थर की मठियां बनाकर शान्तिपूर्वक रहने लगे। लेकिन एक बार दैत्य ने अपना उग्र रूप दिखाया। तब देवराज इन्द्र ने अपना वज्र उठाया।

जघान दानव देवस्तत्रैव वायुवर्जने।
तद्वायुवर्जन नाम तीर्थभूतं सुरर्चितम्॥
मठिकारचनातत्र पाषाणैर्देवतार्थयः।
अनन्त पुण्य माप्नोति वायुवर्जं दर्शनात्॥
महापातकयुक्तो वा युतो वा चोपापतकै।
मुच्यते पातकैर्घोरैर्दृष्ट्वा वा वायुवर्जनम्॥

और उसी जगह राक्षस को मार डाला। तब से यह जगह वायुवर्जन देवताओं से पूजित तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। यहां पत्थरों द्वारा देवताओं के लिए छोटे-छोटे घर बनाने तथा तीर्थ के दर्शन से मनुष्य अत्यन्त पुण्य को प्राप्त होता है ब्रह्म हत्या और गौ हत्या से युक्त मनुष्य इस तीर्थ के दर्शनों से इन महापापों से छूट जाता है।

हत्यारा तालाब

शृणु शीले ! प्रवक्ष्यामि शुष्कीभूतं सरोवरम्।
येन विज्ञातमात्रेण नरो मुच्येत संशयात्॥

हे देवी ! जिस कारण यह तालाब (हत्यारा तालाब) सूख गया है वह सुनो। इसके सुनने से पुरुष संशय से रहित हो जाता है।

जब भगवान श्री सदाशिव जी महाराज तथा देवराज इन्द्र ने राक्षसों को नष्ट किया तो कुछ राक्षस भागकर इस तालाब में छिप गए और फिर वह राक्षस थोड़े समय के पश्चात्, देवताओं को पूर्ववत् दुःख देने लगे। भगवती पार्वती और सदाशिव जी महाराज विचरते हुए वहां आए। भगवती पार्वती ने भगवान श्री सदाशिव जी महाराज से देवताओं के दुख दूर करने के लिए कहा। भगवान श्री सदाशिव महाराज ने हुँकार किया और फिर डर कर इस तालाब में छुप गए। भगवान श्री सदाशिव महाराज ने शाप दिया। वह तालाब सूख गया।

इस स्थान पर यात्रियों को मौन होकर यात्रा करनी चाहिए ।

तत: पंचतरङ्गिण्या: पंचस्रोतस्तु सुन्दरि ! ।।
स्नायाद्देवर्षिपितृंश्च तर्पयेत्सुसमाहित: ।।

हे सुन्दरी ! इसके बाद पंचतरंगिणी (पंचतरनी) के पांच प्रवाहों में स्नान करे और देवता ऋषि तथा पितरों का सावधान होकर तर्पण करें ।

पंचतरनी गंगा

पुरातान्डवलग्नस्य नृत्यमानस्य भूपते: ।
प्रमोदातिशयात्तस्य कपर्द: शिथिलोऽभवत् ।।
ततोवै पंचधा देवी प्रादुर्भूता कपंदत: ।
गंगा भगवती देवी महापातकनाशिनी ।।

पूर्वकाल में एक बार भगवान श्री सदाशिव महाराज ताण्डव नृत्य कर रहे थे और नृत्य करते समय उनकी जटाजूट ढीला हो गया और उसमें से फिर पंचतरनी गंगा निकली जो महापापों को दूर करने वाली है ।

जो मनुष्य इस आलस्य रहित पंचतरनी नदी में स्नान करता है, वह ब्रह्म-हत्या आदि घोर पाप से मुक्त हो जाता है । यहां पर स्नान करने वालों को वही फल मिलता है जो कुरुक्षेत्र, प्रयाग, नैमिषारण्य में स्नान तथा दान करने से प्राप्त होता है ।

गौर्हिरण्यं सुवासश्च क्षौमं चन्दननेव च ।
कुंकुमागुरुकर्पूरमृगाभ्यादि सुन्दरि: ! ।।
यो ददाति सुविप्राय: स शिवलोकमाप्नुयात ।
आरुहेदुच्च शिखरं ततो डामरक श्रयेत् ।।

हे सुन्दरी ! यदि इस तीर्थ पर गऊ, वस्त्र, चन्दन, कैसर, अगर, कस्तुरी आदि ब्राह्मण को दान दिए जावें तो यात्री को शिव धाम की प्राप्ति होती है । इसके पश्चात् ऊंची चोटी वाले पहाड़ पर चढ़ कर डमारक देवता के दर्शन करने चाहिएं ।

डमारक देवता की कथा

महापातक युक्तो वा युता ब्रह्म पपातकैः।
पुन्यं डामरक कष्ट्वा मुच्यते पापकोटिभिः ।।
बहुनात्र किमुक्तेन पूछा प्रक्रमण तथा।
कृत्वामरेश्वरस्यैव दर्शनाहोंभवेत्पुमान् ।।

बडे से बड़ा पापी भी डमारक देवता के दर्शन करने से पापों से छूट जाता है। हे देवी ? अधिक क्या कहूँ बस इतना कहना ही पर्याप्त है कि यात्री डमारक देवता की पूजा तथा परिक्रमा करने से ही श्री अमरनाथ के दर्शन योग्य होता है।

एक बार भगवान श्री सदाशिव जी महाराज नृत्य में इतने लीन हो गए कि उनका सन्ध्या का समय भी व्यतीत हो गया। इससे उनको बड़ी चिन्ता हुई'

तदाप्रभृति देवेशि ! तत्र डमरकोगणः।
तस्यौ सन्ध्या वेदनार्थं भवस्य सुर पूजिते ।।

एक बार भगवान श्री सदाशिव जी महाराज श्री कार्तिक स्वामी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे कि उक्त गण को निद्रा आ गई और भगवान श्री सदाशिव महाराज का सन्ध्या काल व्यतीत हो गया। इससे भगवान श्री शदाशिव जी महाराज के क्रोध का कोई पारावार न रहा और उन्होंने उक्त गण को श्राप दिया कि वह शिला रूप होकर देर तक वहां ठहरे। वह गण काँपता हुआ भगवान श्री सदाशिव महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ, लेकिन भगवान ने उसको क्षमा नहीं किया लेकिन यह जरूर कहा कि जो यहां पर मेरे (श्री अमरनाथ जी के) के दर्शन के लिए आएगा, वह पहले तुम्हारी पूजा तथा परिक्रमा करेगा।

तदप्रभृति देवेशि ! महाडामरको गणः.
दृषद्रुषोऽभवत्तत्र रत्नपर्वतमूर्धनि ।।
यः कश्चिन्मानवो लोके मर्णं डामरमर्चयेत्।
स प्रयाति शिवस्नानमिति सत्यं बदामिते ।।

हे देवी ! उस दिन से महाडमारक गण रत्न नामक शिखर पर पाषाण रूप होकर रहता है और जो मनुष्य उसका पूजन करता है वह शिव धाम को प्राप्त होता है।

आरुहेद्रत्न शिखरं तक्षडारकं श्रयेत् ।
श्रावण्यामुषसि शैलशिखरे डामरेश्वरम् ।।
भैरवं पूज्ययेद द्रष्ट्वा भक्तायाऽथ सुरसुन्दरि ! ।
दीपं घृतमयं पुपमोदकान् वि नवेदयेत ।।

यात्री को चाहिए कि श्रावणी के दिन प्रातःकाल भैरों घाटी की यात्रा करते हुए चोटी पर डमारक की शरण में पहुँचे। डामरेश्वर भैरव का दर्शन और भक्ति सहित पूजन कर व्रत की जोत जलावे और मालपूओं तथा लड्डुओं का भोग लगावे।

गर्भ योनि

परिक्रम्य च नत्वाथ पर्वतादवरोहयेत् ।
मध्यतस्तत्र गच्छन्वें प्रविभेद्गर्भवासकम् ।।
तत्र सकृत्प्रविष्टरस्य न पुनर्गर्भसम्क्ष ।
तस्मान्नि: सृत्य देवेशिप्रपश्येदरमायतीम् ।।
यस्या दर्शनमात्रेण मर्त्योऽमर्त्यत्वचप्नुयात् ।
तद्वार्यमृतकल्पे तु स्वात्वा भूति प्रलेपयेत ।।

परिक्रमा और प्रणाम कर पहाड़ से उतरतें समय मध्य में चलता हुआ मार्ग में जो गर्भयोनि है, उसमें प्रवेश करें क्योंकि इसमें एक बार जाने से फिर मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता है, गर्भयोनि से निकल कर अमरावती नदी में प्रवेश करें। अमरावती के दशन मात्र से मनुष्य देवता तुल्य हो जाता है। इस नदी के अमृत समान जल में स्नान करके यात्री को चाहिए कि भस्म को अपने शरीर पर मले।

यः कश्चिदपि चेशानि ! पुण्यगर्भांहंश्रयेत् ।
गर्भात्स मुच्यते जन्तुरिति न वचन क्रिये ।।
यदा कैलाशशिखरे क्रीडतस्तस्य धर्वतेः ।
आक्षया चाभवन्नन्दी द्वारपालो महेश्वरि ।।

देवी ! जो मनुष्य पवित्र गर्भयोनि में से निकल कर अमर गुफा को जाता है उसका फिर पुनर्जन्म नहीं होता है और फिर वह शिवरूप हो जाता है। देवी ! यह बात बिलकुल सत्य है। हे ईशानि ! जब भगवान श्री सदाशिव जी महाराज कलाश पर्वत पर नृत्य कर रहे थे, उस समय नन्दी उनकी आज्ञानुसार द्वारपाल था।

देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के दर्शन के लिए आए तो नन्दी ने उनको रोका। अब देवताओं तथा नन्दी में परस्पर युद्ध होने लगा। नन्दी ने भगवान श्री सदाशिव जी महाराज से शिकायत की।

भगवान श्री सदाशिव जा महाराज ने नन्दी से कहा—'तुम दण्ड धारण करो। देवता तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे। तुम द्वार पर चलो और दीवार बनाकर मार्ग में गर्भयोनि को रख दो। देवता उसमें प्रवेश न कर सकेंगे।

इति तस्य वचः श्रुत्वा महेशस्त महागणः।
महाप्रस्थं समुत्थाप्य गर्भागारे न्याधीपयत ॥
महापापवनं छेतू चेदिच्छेःप्रसर्भंप्रिये।
तदाश्रयेत्तु देवेशं गर्भागारांवनिस्मृतः ॥

भगवान श्री सदाशिव जी महाराज की बात सुनकर नन्दी ने गर्भग्रह के आगे एक बहुत बडा पत्थर रख दिया, जिसमें कि योनि सदृश छिद्र था। हे प्रिये ! जो पुरुष जन्म-जन्मान्तर के पापों से मुक्त होना चाहे वह गर्भयोनि में से निकल कर श्री अमरनाथ के दर्शन करे।

स्नात्वामरावती नाम्ना नदी परमपावनोम्।
तत्पड.कसितदेहश्चय बहुवस्त्रविवर्जितः ॥
प्रलपञ्छिव ! पन्थान देहि मे परमेश्वर।
तदा रोहेत् गिरिवरं त्यक्तवा क्रोधादि विक्रयाम ॥

फिर अमरावती नदी में स्नान कर उसी की भस्मरूप कीचड़ को शरीर पर मल कर और उनसे सफेद होकर थोड़े वस्त्र, कोपीन, और रेशमी धोती को पहन कर 'सन्मार्ग प्रदान करो' कहते हुए तथा 'शिव शिव' उच्चारण करते हुए क्रोध, मोह आदि को त्याग कर पहाड़ पर चढ़ें।

प्रणमेद्देवदेवेशं गुहास्थममरेश्वरम् ।
स्तुवीत ह्यनयास्तुत्या भक्त्या तद्गतमानसः ।।

मनुष्य गुफा में स्थित अमरेश्वर भगवान देवताओं के देव भगवान को नमस्कार करें और प्रभु के चरणों में मन लगाकर भक्ति के साथ इस तरह स्तुति करें :—

दयां कुरु हे दयासागर हर हर शिव शङ्कर शम्भो ।
दयां कुरु हे दयासागर हर हर शिव शङ्कर शम्भो ।।
संकटभूधरभेदनिमूदन शशधरशेखर नरकारे ।
भवसागर तारक हे त्र्यम्बक भवभयहरशकर शम्भो ।।
बाह्याभ्यन्तरदोषाणां क्षये तद्दर्शनं नृणाम् ।
दर्शनात्स्पर्शनाच्चि पूजनाच्चापिवन्दनात् ।।
अमरेशस्य तल्लिङ्गं सत्यं नैवात्र संशयः ।
महापापकयुक्तानां युक्तनामुपपातकैः ।।
सर्वपापापहं नान्यत्सुलभं देस्तरे कलौ ।
स्नानानीत्थं वितस्तायांषटप्रोक्तानिपथोऽन्तरे ।।
त्रिंशदन्यत्र यात्रायाममरेश्वरदर्शने ।
षट्त्रिंशत्तत्वरूपाणां क्षेत्राणां परतः स्थितः ।।
इत्थं सम्पाप्यते शुद्धं शिवधामामृतेश्वरः ।
एव कृत्वा नरो यात्रां पश्येद् लिंगं रसात्मकम् ।
सयाति शिवसायुज्यं यतो भूयो न जायते ।।

सुधा लिंग के दर्शनों से मनुष्य, बाहर या भीतर का मैल नष्ट होकर वह शुद्ध या पवित्र हो जाता है । अमृत से बने हुऐ सुधा लिंग के दर्शनों से स्पर्श पूजन तथा वन्दन से महापापी मनुष्य भी समस्त पापों से छूट जाता है। कलयुग में मुक्ति का इससे बढ़ कर दूसरा साधन बिल्कुल नहीं है । वितस्ता (जहलम नदी) मे ६ स्नान और श्री अमरनाथ जी की यात्रा में ३० स्नान है। इसके अलावा यहां पर देवताओं के ३६ स्थान हैं उन देव स्थानों के दर्शन करने से मनुष्य को शिवधाम की प्राप्ति होती है। इस प्रकार यदि मनुष्य यात्रा करता हुआ रसात्मक लिंग के दर्शन करे तो मोक्ष को प्राप्त होता है। जिससे कि उसको फिर बार-बार जन्म मरण का दुःख नहीं भोगना पड़ता।

इदानी श्रोतुमिच्छामि ह्यमरेशं महेश्वरम् ।
कथं सह्यमरेशाख्यो गुहास्थोऽप्यभवत् किल ॥
शृणु वक्ष्ये महातीर्थं ह्यमरेशस्य सुन्दरि ।
यच्छ्रुत्वा प्रविमुच्येत महापातक कोटिभिः ॥

पार्वती जी बोलीं—प्रभो ! अब अमरेश महादेव की कथा सुनना चाहती हूँ और यह जानना चाहती हूँ कि महादेव गुहा में स्थित होकर अमरेश क्योंकर या कैसे कहलाये !

भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने उत्तर दिया--

देवी सुनो ! मैं अब अमरनाथ जी के महातीर्थ के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक कहता हूँ। इसके सुनने से मनुष्य करोड़ों पापों से छूट जाता ह।

आदि काल में ब्रह्मा, प्रकृति, अहंकार, स्थावर (पर्वतादि) जंगल (मनुष्य) संसार की उत्पत्ति हुई। इस क्रमानुसार देवता, ऋषि, पितर, गन्धर्व राक्षस, सर्प, यक्ष, भूतगण, कुष्माण्ड, भैरव, गीदड़, दानव आदि की उत्पत्ति हुई। इस तरह नए प्रकार के भूतों की सृष्टि हुई। परन्तु इन्द्रादि देवता सभी मृत्यु के वश में हुए थे। देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के पास गए और उनकी स्तुति की। देवताओं ने कहा कि हमको मृत्यु बाधा करती है। आप कृपया कोई ऐसा उपाय बतलावें जिससे कि मृत्यु हम लोगों को बाधा न करे।

श्रुत्वा देववचः सौम्यं महेशः प्रत्युवाच तान् ।
मृत्युपाय करिष्यामि सहध्वं सुरसत्तमाः ॥
गृहीत्वा शिरसस्तत्र हरश्चन्द्रकलां स्वयम् ।
संपीड्य दवानदन्मृत्युभेषजमुत्तमम् ॥

भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने देवताओं की बात सुनकर कहा—“आप लोगों की मृत्यु के भय से रक्षा करूँगा।” भगवान श्री सदाशिव ने इस तरह कहकर अपने सिर पर से चन्द्रमा की कला को उतारकर निचोड़ा और देवताओं से कहा—‘यह आप लोगों के मृत्यु रोग की औषधि है।’

सम्पीडनान्निः सुता या च धारा पारमिका प्रिये ।
सैव भूता नदी पुण्या नाम्ना वै ह्यमरावती ॥

ये विन्दुवश्च्युता देवि ! शरीरेऽस्य महात्मनः ।
ते भस्मरूपतां प्राप्य च्युताश्चाश्यानतां गताः ।।

देवी ! इस चन्द्रकला के निचोड़ने से पवित्र अमृत की धारा बह निकली और वह धारा अमरावती नदी है। प्रिये ! जो अमृत के बिन्दु चन्द्रकला के निचोड़ते समय भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के शरीर पर पड़े थे वह सूख गए और पृथ्वी पर गिर पड़े। गुंहा में जो भस्म है वह अमृत बिन्दु की बहिन है भगवान जी के चन्द्रकला के निचोड़ से शरीर पर और बाद में पृथ्वी पर गिरे थे।

प्रेरणा येषां महादेवि । शिवोऽपि द्रम्तामगात् ।
ते तु द्रष्ट्वा शिवं तत्र द्रवीभूतं महेश्वरि ! ।।
तुष्टुबुर्वाग्भिरर्थ्याभिः प्रणेमुश्च मुहुर्मुहुः श्च ।
स्वं पुर्नदर्शयामास देवानां हितकाम्यया ।।

हे देवी ! भगवान श्री सदाशिव जी महाराज देवताओं को प्रेम दिखाते हुए द्रवीभूत हो गए। देवता भगवान श्री सदाशिव जी महाराज को जल स्वरूप देखकर स्तुति करने लगे और बार-बार नत-मस्तक होकर नमस्कार करने लगे। तब भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने पुनः अपना यथार्थ स्वरूप उनको दिखाया।

इसी कारण प्रत्येक पक्ष में अमृत पिघलता और जमता है।

रसोप्यश्यानतां प्राप्य लिङगरुपोऽभवत् प्रिये ।
लिङ्गरूपं हरं वीक्ष्य द्रवीभूत महेश्वरि ।।
पुनः पुनः प्रणेमुस्ते भवं कारूणिक परम् ।
देवांस्तुतिपरानद्रष्ट्वा प्रोवाच सुरसत्तमः ।।

देवी ! यह रस (द्रवीभूत) कठिन होकर लिंग रूप में परिवर्तित हो गया। लिंग रूप भगवान श्री सदाशिव जी महाराज को फिर द्रवीभूत हुआ देखकर देवता उनको बारम्बार नमस्कार करने लगे। भगवान श्री सदाशिव ने बड़ी दयायुक्त वाणी से देवताओं से कहा—

हरः परमाया वाचा श्रृणुध्वं देवसत्तमाः ।
यस्माद्मद्दृष्टं मे हेमलिंग दरीगृहे ।।

तस्मान्न मृत्युर्युष्मान् वै बाधते मदनुग्रहात् ।
इहैव ह्यमरा भूत्वा प्रयात शिव रूपताम् ।।

हे देवताओं ! तुमने मेरा बर्फ का लिंग शरीर इस गुफा में देखा है। इस कारण मेरी कृपा से आप लोगों को मृत्यु का भय नहीं रहेगा अब तुम यहीं पर अमर होकर शिव रूप को प्राप्त हो जाओ ।

इतः प्रभृति मे लिङ्गं ह्यमरेशाख्यमुत्तमम् ।
पुण्यं परतरं दवात्रिलोके ख्यातिमेष्यति ।।
नत्वा च दण्डवद्देवालिंगं तदमरेश्वरम् ।
ततः प्रदक्षणीकृत्य स्वं स्वमालयमाययुः ।।

आज से मेरा यह अनादि लिंग शरीर तीनों लोकों में अमरेश के नाम से विख्यात होगा ।

देवता इस अमरेश्वर महाराज के लिंग शरीर को नमस्कार और परिक्रमा करके अपने-अपने स्थान को चले गये और सत्ता रूप से गुफा में भी रहे ।

इति दत्वा वर देवानमरेशो महेश्वरि ! ।
तदाप्रभृति लीनोऽभूद्गिरिदर्ग्यन्तरे हरः ।।
असां सोमकलां प्राप्य देवानां हित काम्यया ।
मृत्युनाशं चकराशु तस्माद्वै ह्यमरेश्वरः ।।

हे देवी ! भगवान सदाशिव देवताओं को ऐसा वर देकर उस दिन से लीन होकर गुफा में रहने लगे। भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने अमृत-रूप सोम कला को धारण करके जो देवताओं की मृत्यु का नाश किया इस लिए तभी से उनका नाम अमरेश्वर प्रसिद्ध हुआ है ।

भ्रूणहा गुरूतल्पी च सुरापः स्वर्णहारकः ।
एनं द्रष्ट्वा महेशानि ! ह्यमरेश्वरसंज्ञकम् ।।
महापातकयुक्तो यः ग्रुतो वा ह्युप पातकैः ।
द्रष्ट्वा रसमयं लिङ्गं सद्योमुच्येत सुन्दरि ।।

हे महेश्वरि ! गर्भपात करने वाला गुरु की शय्या पर आरूढ़ होने वाला, मदिरा पीने वाला, स्वर्ण चुराने वाला, गऊ हत्या करने वाला, ब्रह्म हत्या आदि करने वाला यदि श्री अमरनाथ जी के रसमय लिंग शरीर का दर्शन करे तो वह उसी क्षण समस्त पापों से मुक्त हो जाता है ।

कबूतरों का रहस्य

कपोताः के गणास्तत्र कथ कुत्र स्थिता प्रभो ॥ ।

वदमे कृपया शम्भो ! लोकानां हितकाम्यया ॥

भगवान पार्वती ने भगवान श्री सदाशिव जी से पूछा—'प्रभो ! कौन से शिवगण कबूतर हुए हैं और कबूतर क्यों कर हुए हैं और कहां पर स्थित हैं। कृपया यह सब मुझे विस्तार पूर्वक बतलाइये।'

भगवान श्री सदाशिव बोले—एक समय भगवान महादेव सन्ध्या समय नृत्य कर रहे थे कि यह गण आपस में ईर्षा के कारण 'कुरु कुरु' शब्द करने लगे। महादेव जी ने क्रोधित होकर उनको यह शाप दिया कि तुम दीर्घकाल तक यही शब्द (कुरु कुरु) करते रहो। चुनाचि वह रूढ़ रूपी गण उसी समय कबूतर हो गये। इनके दर्शनों से समस्त पाप दूर हो जाते हैं।

यात्रा का समय

भगवती श्री पार्वती ने भगवान श्री सदाशिव जी महाराज से पूछा।

प्रभो किस समय की यात्रा महाफल के देने वाली है। श्री अमरनाथ जी के दर्शन व पूजन से क्या फल प्राप्त होता है? इसके अतिरिक्त यह भी बताइये कि बड़े से बड़ा पापी किस वस्तु का दान करे जिससे कि उसके समस्त पाप नष्ट हो जायें।

यतः स्वं दर्शयामास श्रावण्यां च हरः स्वयम् ।
ततश्च कथितायात्रा श्रावण्यां पुण्यदायिनी ॥

हे देवी ! श्रावणी पर यात्रा करनी बड़े भारी पुण्य को देने वाली है। क्योंकि भगवान श्री सदाशिव जी महाराज ने अपना स्वरूप रक्षा पूर्णिमा में ही प्रकट किया है।

वाराणस्यादशगुणं प्रयागाच्च शत स्मृतम् ।
सहस्रगुणितं देवि ! नैमिषात्कुरूजाङ्गलात् ॥
तत्पुण्यफलदं प्रोक्तं मया तव प्रियेच्छया ।
दिव्वं वर्षसहस्रन्तु लिंगार्ब्रदपूजनम् ॥
सुवर्णपुष्पैः मुक्ताभि, क्षौमैर्वरपटैस्तुयत् ।
तत्फल समाप्नाति रसलिंगस्य पूजनात् ॥

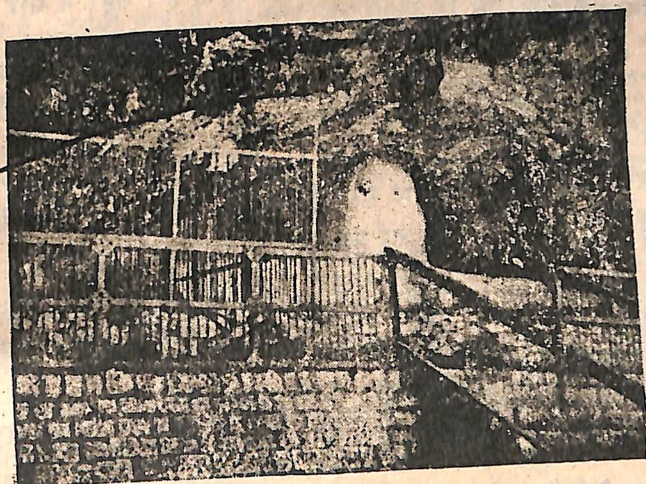
देवीं ! काशी में लिङ्ग दर्शन तथा पूजन से दस गुणा, प्रयाग से सौ गुणा, नमिषारण्य तथा कुरुक्षेत्र से हजार गुणा अधिक पुण्य देने वाला श्री अमरनाथ जी का पूजन है। जो कि मैंने तुम्हारे हित के लिए कहा है। देवताओं की हजार वर्ष तक सोने. फूल, मोती और पट्ट वस्त्रों से पूजा का जो फल मिलता है वह श्री अमरनाथ के रसलिंग पूजा से एक ही दिन में प्राप्त हो जाता है।

कस्तूरी, कपूर, चन्दन, केसर, मोती, सोना चांदी, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और अनेक प्रकार की सामग्री से जो मनुष्य भगवान श्री अमरनाथ जी का पूजन करता है उसको बड़ा भारी फल मिलता है। भगवान श्री अमरनाथ जी की आरती और पमिक्रमा से भी बहुत पुण्य प्राप्त होता है।

श्री अमरनाथ जी का दर्शन, स्पर्शन करके पंचतरंगणी के उत्तर संगम में जाकर देव व पितृ प्रसन्नार्थ श्राद्ध करे।

लौटने पर यात्रियों को मामलारुय महाग्राम में जाकर श्री गणेश जी का पूजन करना चाहिए और वहां गंगा के तट पर खड़ी भगवती जी से जो भगवान श्री सदाशिव जी महाराज के सिर पर स्थित है अपनी यात्रा के सफल होने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। पाताल गंगा में स्नान करके यात्रियों को अपने-अपने घरों को वापिस जाना चाहिए।

अमरनाथ की गुफा



श्री वैष्णो देवी का विवरण

वैष्णोदेवी का मन्दिर जिसे माता का द्वारा भी कहते हैं, रियासत जम्भू कश्मीर में है । इस स्थान की यात्रा हिन्दुओं में बहुत महत्व रखती है । हर साल भारत के कोने-कोने से खासकर पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, देहली प्रान्त और उत्तर प्रदेश से लाखों भक्तजन माता के दर्शन करने का आते हैं और देवी के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं । यह स्थान जम्मू से लगभग ४० मील दूर पहाड़ी पर है । जम्मू से बस द्वारा पहले कटड़ा जाना पड़ता है और इससे आगे का रास्ता पैदल या घोड़े पर तय किया जाता है ।

जम्मू एक बहुत प्रसिद्ध और प्राचीन शहर है, यह एक पहाड़ी के ऊपर बसा हुआ है । जम्मू शहर और इसके आस पास बहुत से मन्दिर हैं । यहां का रघुनाथ जी का मन्दिर सबसे बड़ा है इस मन्दिर में एक बहुत बड़ी धर्मशाला भी है यहां यात्री लोग विश्राम करने के लिए ठहरते हैं । शहर में और भी कई धर्मशालायें हैं ।

कटड़ा—यह स्थान जम्मू से तीस मील दूर है और समुद्र की सतह से २००० फुट की ऊंचाई पर है । यह नगर पहाड़ी की उतराई पर बसा हुआ है और यहां की प्राकृतिक सुन्दरता बहुत ही आकर्षण है । यहां पर भी कई मन्दिर हैं जहां यात्री पूजा पाठ करते हैं, ठहरने के लिए यहां कई धर्मशालायें भी हैं जहां यात्रियों के लिए कई प्रकार की सुविधायें प्राप्त होती हैं ।

कटड़ा से चलकर दो मील की दूरी पर चरणपादुका मन्दिर आता है, चरणपादुका मे माता के दाहिने पांव का चिह्न है, इसलिए इस स्थान का नाम चरणपादुका पड़ गया है ।

आदिकुमारी चरणपादुका से चलकर कुछ फासले पर आदिकुमारी का स्थान आता है । यहां यात्रियों के लिए धर्मशालायें व तलाब है, यहां एक तंग गुफा है जिसे 'गर्भवास' कहते हैं ।

आदिकुमारी से हाथी मत्था, कमान, गोश, सांझी छत्र और भैरों दाप से होते हुए यात्री वैष्णोदेवी पीठ पर पहुँचते हैं। यहां भगवती वैष्णो देवी ने दमन द्वारा महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के साथ तादात्म्य प्राप्त किया है। यह गुफा समुद्र से ५२०० फुट की ऊंचाई पर है। देवी का निवास एक तंग और लम्बी गुफा के अन्दर है जो कि देवी ने त्रिशूल के प्रहार से पहाड़ बना लिया है।

गुफा के अन्दर भगवती वैष्णो देवी, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती नाम की तीन पिण्डियां हैं जो कि भगवती वैष्णो देवी के ही स्वरूप हैं। इन मूर्तियों के चरणों से निर्मल जल की धारायें बहती रही हैं, इसे बाण गंगा भी कहते हैं। गुफा के बाहर इसी पानी में यात्री स्नान करके दर्शन को जाते हैं।

काश्मीर

काश्मीर पृथ्वी पर स्वर्ग है। इसकी प्राकृतिक सुन्दरता संसार में एक अपना ही विशेष स्थान रखती है। जिसकी व्याख्या करना सूर्य को दीपक दिखाना है। इसकी सुन्दरता को चार चाँद लगाने का श्रेय वहां पर स्थान स्थान पर स्वच्छ, निर्मल पानी के चश्मे, नदियां, ऊंचे-ऊंचे पर्वत शिखर, बर्फ से ढकी चोटियाँ, हरे-हरे बाग तथा सुन्दर घाटियों को है। इनको देखकर मनुष्य को अनायास ही यह आभास होता है कि जैसे वह स्वर्ग में हो, इसके साथ ही ऐसे सुख की अनुभूति करता है जिससे अत्यन्त ही मनमोहक अनन्य आनन्द की प्राप्ति होती है।

सूर्यास्त की बेला का वह मन मोहक दृश्य जिसे देखकर मनुष्य के मुंह से अनायास ही निकल पड़ता है कि संसार में ऐसा लुभावना दृश्य शायद ही कहीं प्राप्त हो सके। जब हरे-हरे वृक्षों पर साँय काल सूर्य की लालिमा पड़ती है तो उस वक्त की छवि देखते ही बनती है। जैसे नवोदित गुलाब की कलियां विकसित हो रही हों या यों कहिए कि इसकी सुन्दरता को देखकर स्वर्ग से देवता लोग पुष्प वर्षा कर रहे हो।

काश्मीर घाटी की लम्बाई ६० मील और चौड़ाई २० से २५ मील तक है और ऊंचाई ५२०० फुट से ६००० फुट है। काश्मीर जाने के लिए बम्बई, कलकत्ता, देहली, अमृतसर व देश के कोने कोने से यात्रियों को रेल द्वारा पठानकोट पहुँचना पड़ता है। देहली अमृतसर, से विमान द्वारा भी सीधे श्रीनगर पहुँचा जा सकता है।

पठानकोट से श्रीनगर तक डीलैक्स बसें चलती हैं। पठानकोट से ६७ मील के फासले पर एक शहर 'जम्मू' है। यहां पर कई धार्मिक स्थान हैं जिनमें सर्वश्रेष्ठ प्रसिद्ध मन्दिर 'श्री रघुनाथ जी' का है। जम्मू के आगे पहाड़ी मार्ग प्रारम्भ हो जाता है। कई ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों को पार करने के पश्चात् फिर नगर पहुँचा जाता है। रास्ते में ऊधमपुर, कूद, बटोत, रामवन बनिहाल काजी कुंड और खन्नावल आदि प्रसिद्ध पड़ाव आते हैं। बनिहाल से आगे पीर पजाल की पहाड़ियों में जवाहर सुरग से होकर कश्मीर घाटी में प्रवेश किया जाता है। यहां का दृश्य अति सुन्दर है।

श्री नगर

यह काश्मीर घाटी का सबसे खूबसूरत शहर है। यह 'जेहलम' नदी के दोनों ओर स्थित है। इसके बाहर सुन्दर 'डलझील' है। एक ओर हाउसबोट की सुन्दर पंक्तियां हैं। झील के उज्ज्वल निर्मल जल पर शिकारें सैलानियों की सैर कराते हैं। हाउसबोटों को बहुत सुन्दरता से सजाया गया होता है जिनमें सैलानी' रहना अधिक पसन्द करते हैं।

नेहरू पार्क

यह डल झील में एक टापू की तरह है। जो बहुत आकर्षक लगता है। वहाँ तक किश्ती में बैठकर जाना पड़ता है। लोग मोटरबोट में बैठकर झील की सैर का दूर दूर तक आनन्द लेते हैं।

शंकराचार्य जी का मन्दिर

यह एक प्राचीन मन्दिर है जो कि शंकराचार्य नामक पहाड़ की एक हजार फुट ऊंची चोटी पर स्थापित है। इसकी चोटी पर खड़े होकर श्रीनगर

के चारों ओर के दृश्य साफ दिखाई देते हैं जो कि बहुत ही मनमोहक लगते हैं।

चश्माशाही

यह स्थान श्रीनगर से ५॥ मील की दूरी पर है। इसकी स्थापना मुगल सम्राट 'शाहजहाँ' ने की थी। यह पहाड़ी के आंचल में स्थित है। इसके चारों ओर सुन्दर बाग है दर्शक यहाँ आकर पिकनिक का आनन्द लेते हैं। इस चश्मे के पानी की श्रेष्ठता यह है कि स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद है। यहाँ से डलझील, नसीम बाग, चार चिनार आदि के दृश्य बहुत सुहावने लगते हैं।

निशात बाग

चश्मे शाही से ढाई मील की दूरी पर डल झील के किनारे पर है। यह सब बागों में सुन्दर बाग है। यह तरह-तरह के फूल, पौधों और पेड़ों से सुसज्जित है। इसके एक ओर डल झील' दूसरी तरफ चश्मा है। चश्मे का पानी झरनों द्वारा बाग के मध्य से बहता हुआ झील में चला जाता है। बाग में कई फव्वारे हैं जो इसकी सुन्दरता को चार-चाँद लगाते हैं।

शालीमार बाग

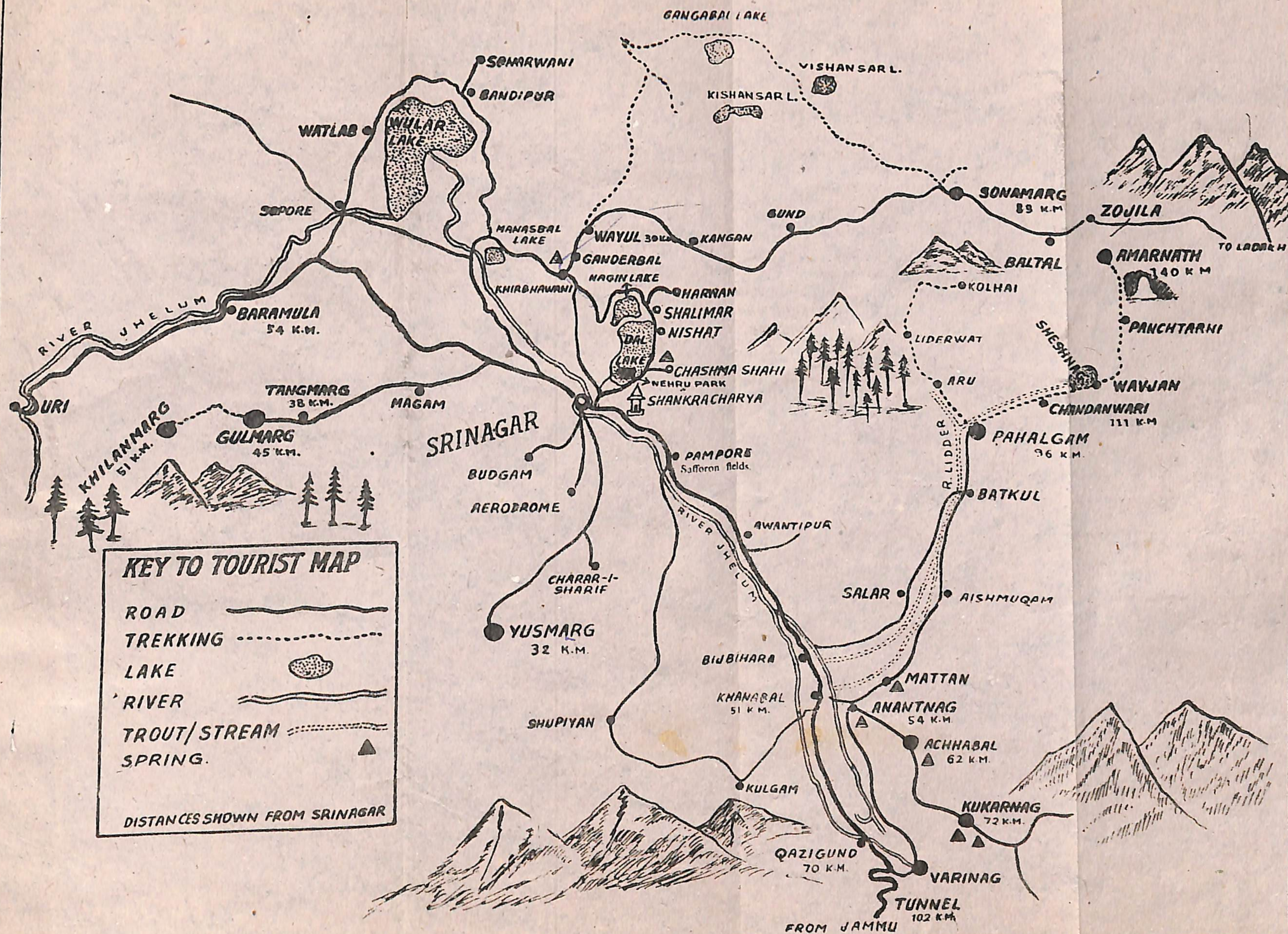
निशात बाग से २ मील की दूरी पर है। इसे जहांगीर बादशाह ने बनवाया था। यह अपनी ही किस्म का एक सुन्दर बाग है। इसकी हरियाली फूलों की सुन्दरता, भिन्न-भिन्न पेड़ों का होना इसकी सुन्दरता को और भी बढ़ा देते हैं। इससे दो मील चलने पर एक और सुन्दर बाग 'हार्वन' है। इसमें एक बहुत बड़ा बांध बना हुआ है। इसी बांध का पानी श्रीनगर शहर में बितरण किया जाता है।

श्रीनगर
से
अमरनाथ

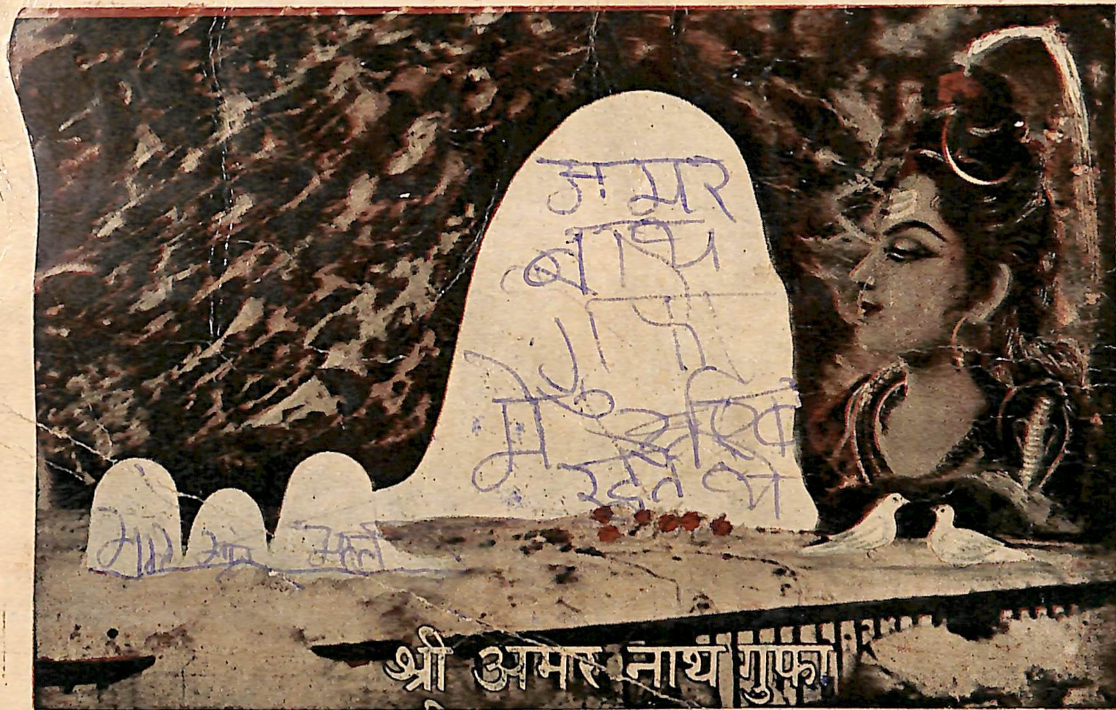
श्रीनगर से फासला

	कि० मी०	मील
पानपूर	१४	९
अवन्तीपुर	२८	१८
बीजनिहारा	४६	२९
अनन्त बाग	५३	३४
मटन	६३	३९
ऐशमुकाम	८५	४७
पहलगाँव	९५	६०
चन्दनबारी	१११	६९
शेषनाग	१२२	७७
बावजन	१२४	७८
पंचतरनी	१३४	८४
अमरनाथ गुफा	१४१	८८

मुद्रक : गुप्ता प्रिंटिंग वर्क्स, ४७२ साईकिल मार्किट दिल्ली-११०००६



GANGABAL LAKE
VISHANSAR L.
KISHANSAR L.
SONARWANI
BANDIPUR
WATLAB
WULAR LAKE
SOPORE
MANASBAL LAKE
WAYUL
KANGAN
BUND
SONAMARG
89 K.M
ZOJILA
TO LADAKH
BALTAL
AMARNATH
140 K.M
GANDERBAL
NAGIN LAKE
KHIRBHAWANI
HARWAN
SHALIMAR
NISHAT
DAL LAKE
CHASHMA SHAHI
NEHRU PARK
SHANKRACHARYA
KOLHAI
LIDERWAT
SHESHNAG
PANCHTARNI
ARU
WAVJAN
CHANDANWARI
111 K.M
PAHALGAM
96 K.M.
RIVER JHELUM
BARAMULA
54 K.M.
URI
TANGMARG
38 K.M.
MAGAM
GULMARG
45 K.M.
KHILANMARG
51 K.M.
SRINAGAR
BUDGAM
AERODROME
PAMPORE
Safforon fields
R. LIDDER
BATKUL
AWANTIPUR
RIVER JHELUM
KEY TO TOURIST MAP
ROAD
TREKKING
LAKE
RIVER
TROUT/STREAM
SPRING.
DISTANCES SHOWN FROM SRINAGAR
CHARAR-I-SHARIF
YUSMARG
32 K.M.
SALAR
AISHMUQAM
BIJBIHARA
MATTAN
KHANABAL
51 K.M.
ANANTNAG
54 K.M.
SHUPIYAN
ACHHABAL
62 K.M.
KULGAM
KUKARNAG
72 K.M.
QAZIGUND
70 K.M.
VARINAG
TUNNEL
102 K.M.
FROM JAMMU


श्री अमर नाथ गुफा